

श्री ब्रह्मानन्द भजन-माला

(डोगरी)

वेदान्त पुष्पमाला दा छेमां फुल्ल

(श्रीब्रह्मसंकीर्तनम्)

डोगरी भजन-माला

श्री स्वामी १०८ ब्रह्मानन्द जी तीर्थ
आयुर्वेदाचार्य

डोगरी संस्था जम्मू ।

प्रकाशक—डोगरी संस्था जम्मू ।

मुल्ल : १) रुपये

मुद्रक : विजय प्रिंटिंग प्रेस मोती बाजार जम्मू ।

श्री ब्रह्मानन्द भजन माला

(डोगरी)

डोगरी साहित्य ने पिछले १५-२० वर्षों में अप्रत्याशित ढंग से उन्नति की है। इस उन्नति की सब से सुखद तथा उसाहवर्धक विशेषता यह रही है कि यह विकास एकांगी न हो कर प्रायः साहित्य के सभी प्रधान अंगों में जीवन संचार करता हुआ चला है।

काव्य, कथा, उपन्यास, नाटक, लोक-कथा आदि सभी अंग बड़े उचित ढंग से उभरे हैं।

काव्य के क्षेत्र में प्रस्तुत डोगरी भजन-माला के रचयिता श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी तीर्थ डोगरी पाठकों के लिए अपरिचित नहीं हैं।

उन्होंने इस नवीन रचना से पूर्व डोगरी पाठक समाज को अत्यन्त स्थायी महत्व की कई रचनाएं दी हैं, जिन में बड़े साइज के ३०० पृष्ठों का बृहद् वेदान्त-काव्य श्री ब्रह्म-संकीर्तन प्रमुख है। स्वामी जी की यह रचना रियासत के रिसर्च-विभाग की ओर से प्रकाशित हुई है और वहीं से उपलब्ध हो सकती है। इसके इलावा डोगरी संस्था जम्मू ने जिसे स्वामी जी की इस डोगरी काव्य-साधना में प्रवृत्त करने का श्रेय प्राप्त है, स्वामी जी की जो वेदान्त-काव्य सम्बन्धी निम्न-लिखित रचनाएं प्रकाशित की हैं उन के नाम हैं—गुंगे दा गुड़, मान सरोवर, गुप्त गंगा, और अमृत-वर्षा।

इस में कोई सन्देह नहीं कि संस्था द्वारा प्रकाशित इन पुस्तकों में स्वामी जी ने वेदान्त जैसे बौद्धिकत प्रधान विषय को काव्य की माधुरी

में डुबो कर अत्यन्त रसमय सरल और प्रभाव-पूर्ण बना दिया है। संस्था ने भी इन रचनाओं को लागत मात्र मूल्य पर सुलभ करके उन के इस स्तुत्य प्रयास को लोक-प्रिय बनाने में प्रशंसनीय कार्य किया है और अब संस्था स्वामी जी की यह नई रचना जनता जनार्दन की सेवा में उपस्थित करती है।

इस रचना में स्वामी जी द्वारा रचित—गीत दिये गए हैं। ये गीत सरल भाषा, भक्ति रस के भाव सुमनों को गूंथने का डोगरी में पहला प्रयास है। इन गीतों को जिस साधना की भावना से लिखा गया है, उसी भक्ति-विनम्र भावना से पढ़ा गाया जाएगा तो मुझे विश्वास है कि ये गीत अपनी आभा और कोमलता दिखला सकेंगे।

डुग्गर की जनता धार्मिक रुचि रखती है।
CC-0. Dogri Sanstha, Jammu. Digitized by eGangotri

उस धार्मिक रुचि में भी आज कई तरह की विकृत रुढ़ियों का रंग चढ़ा हुआ प्रतीत होता है। धर्म की विशुद्ध भावना की जगह आडम्बर और दिखावे की कृत्रिमता बढ़ती जा रही है। स्वार्थी लोग, धार्मिक लोगों की इस कमजोरी का भरपूर लाभ उठाने में लगे हैं। ऐसे समय में प्रस्तुत डोगरी भजन-माला धार्मिक जनता में तप-त्याग की भावना को यदि अल्पमात्रा में भी जगाने में समर्थ हो सकी तो यह प्रयास सफल हो जायेगा।

संस्था को पूर्ण विश्वास है कि डुग्गर के इस स्वनामधन्य सपूत—स्वामी ब्रह्मानन्द जी तीर्थ की यह रसमयी रचना जनता के लिए उपयोगी और रोचक सिद्ध होगी।

हवेली बेगम, जम्मू।

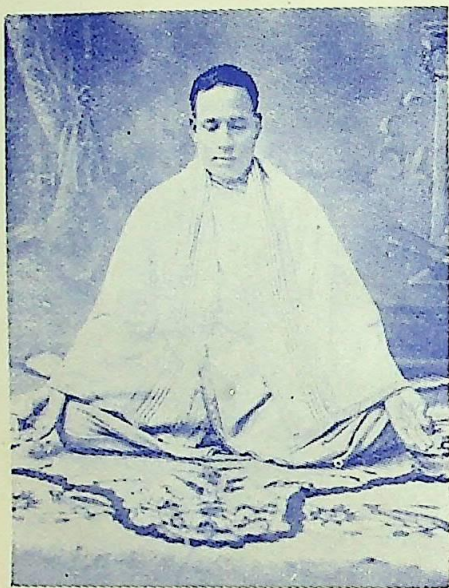
रामनाथ शास्त्री

होली 1961

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८६	१३	देस	भेस
१०१	३	परै	पैर
१३८	१	अठठ	अठठै
१४७	१	नगरी	काया
१७३	८	खड्डु	खड्डु

— — —



श्री स्वामी १०८ ब्रह्मानन्द जी तीर्थ

आयुर्वेदाचार्य

३० वर्ष पहले जबकि यह ४० वर्ष के थे ।

भजन १

धन्न धन्न मुक्ति आखी । टेक ॥ धन्न धन्न०
 सदा दयाली दीपकमाला,
 नौमी नित्त बसाखी ॥
 ब्रह्मा शिवजी शेष नाग ते,
 विष्णो बैकुण्ठ बासी ।
 सादर करी प्रणाम खडोई,
 गुन गान्दे दिन राती ॥
 परम पवित्तर परम-धाम ओ,
 माया जिसदी दासी ।
 समता दी थोई सेज मनोहर,
 नां वैरी, नां साथी ॥
 चौदां भुवन बरासत जिसदी,
 त्रैलोकी समराटी ।
 जनम-मरण दा होआ नवेड़ा,
 सम्बा फेर चुरासी ॥

आवा-गौन दे पैडे मुक्के,

इसै जनम खलासी ।

परम दयालु गुरुयें जेल्लै,

वेद ऋचा सी वाची ॥

ब्रह्मानन्दै अकखी दिक्खी,

भलेयां करी पछान्ती ॥

भजन २

सब भूठा जगत पसारा ॥टेक॥ सब भूठा०

कई जनमें दी किस्मत जागै,

सतगुर देन सहारा ॥

तां ज्ञानै दा साबन लगदा,

जिगर धनोन्दा सारा ॥

भूठी नजर ए जा बदलोई,

तां हुन्दा नस्तारा ।

अन्दर भांकी मारी दिखदा,

लैन्दा अजब नजारा ॥

अन्तः करण होआ निरलेपी,
भेत जानेया सारा ॥

करम कबल्लें कूच बजाए,
सब थीं होआ न्यारा ।

चुट्टी पीग चुरासी वाली,
बढ़ेया ज्ञान लोआरा ॥

विषे-बकारें लेई बिदाई,
मन कड़ेआ औगन हारा ।

वृत्ति बिच प्रकास समाया,
चानन चमकेया सारा ॥

ब्रह्मानन्द सहासन पाया,
त्रैलोकी थीं न्यारा ॥

भजन ३

ए मन नई शरमान्दा । टेक । ए मन०
बकरे वाला मैं-मैं करियै,

छुरियें गला बडान्दा ।

खूनी, बेनियमा, मतवाला,

सिर सिर बाजी लान्दा ॥

चिड़ियें दे घेरें बिच,

आनी बाजें गी पगड़ान्दा ।

डाकू पंज रलाइयै कन्नै,

सारी रास लुटान्दा ॥

जिनें अक्खीं बिच बाल बी रड़कै,

सारे सजन समान्दा ।

जाड़ें-कन्दरें जाई जाई तुपदा,

करड़ियां गण्डीं लान्दा ॥

कदम-कदम पर ठोकर खन्दा,

करनी गी खू पान्दा ।

मौहरा खाइयै धुप्पा सौन्दा,

पिच्छों पच्छो तान्दा ॥

करम कबल्ले आपूँ करदा,

जीवै दै सिर लान्दा ।

.....

नदियां रड़ें बगाइयै दस्सै,

नदलें बाज बरान्दा ॥

आपूं छिरडै जाई खड़ोन्दा,

खिड़-खिड़ हासे पान्दा ॥

इस मश्टण्डे कई घर गाले,

ब्रह्मानन्द सुनान्दा ।

भजन ४

मेरी सारी रास लटोई । टेक । मेरी सारी०

नौ म्हीने जाई पेई गरभै बिच,

रेही पुठ्ठी लटकोई ॥

उस नरकै बिच गई घबराई,

बाहर आन्दे गै रोई ।

इस दुनियां दी बा जे लग्गी,

बिन्द-बिन्द उबड़ी होई ॥

स्हेलड़ियें आई घेरा पाया,

खेडें बिच ललचोई ॥

.....

जोवन आया फुल्ली बैठी,
भलेयां गई बतोई ॥

गरभै दे सब कौल भुलाए,
याद निं रक्खेया कोई ।
हरि-भजनै थीं रेही कतरान्दी,
पापें बिच रंगोई ॥

जागत-कुड़ियां रीं-रीं करदे,
अत्त दुखियारी होई ॥
खान-पीन बी गेआ गोआता,
सूखम जिन्द पिंजोई ॥
दुक्खें भरेया आया बुढ़ापा,
रोगें बिच जकड़ोई ।

कन्नें दा नई डम-डम चुकदा,
जीह्व गई थथलोई ॥
अकखीं, अकखीं दस्सन लगियां,
दन्द बी गे पटोई ।

चार चफेरै झिड़कां-थिड़कां,
भाल निं भलदा कोई ॥

भोग-बलासैं दे फल दिक्खी,
विर-विर किस्मत रोई ।

मन कपटी दियें चालें चलियै,
ऐसी दुर्दशा होई ॥

विषे-बकारें पगड़ी कैंची,
रग-रग गई कतरोई ॥

ए क्रिज बीतेया ब्रह्मानन्दा,
रमज नई पनछोई ॥

भजन नं० ५

ए मन बड़ा बषादी । टेक । ए मन०
मचला बनियै भाने तुपदा,
जिद्दी, मूड़ फसादी ॥

दिनें-दपैहरीं कोठे टपदा,
नां इस गमी नां शादी ॥

आपरशें पर औन्दा जेल्लै,
 करी सुटदा बरबादी ॥
 काम-क्रोध दा अगुआ बनियै,
 नित-नित हारै बाजी ॥
 बिच जंजीरें नई जकड़ोन्दा,
 तुपदा सदा अजादी ॥
 दिन-दिन इन्नी भुक्ख बधाई,
 त्रैलोकी बी खादी ॥
 बिषें-बकरें बिच पलचोई
 नित्त-नित्त रौन्दा राजी ॥
 आतम दर्शन औखा बनेयां,
 लगदी नई समाधी ॥
 जां तक ए वैरी नई मरदा,
 मुक्ति बड़ी दुराडी ॥
 ब्रह्मानन्दा कड़ी लै मुशकां,
 तां होगा बड़ भागी ॥

भजन ६

जिस आतम-दर्शन कीता,

उस अमर प्याला पीता,

तुम्मी भरी-भरी डीकां लायां,

ते आतम-दर्शन पायां ॥

ओ नैनं कच्छा बी नेड़ै,

तेरै रहन्दा चार चुफेरै,

कर तौल, देर नई लायां,

इस जनम गी सुफल बनायां ॥

इत्थों पुट्टना ई इक दिन डेरा,

कोई संग निं साथी तेरा,

ए वक्त निं हत्था गोआयां,

ते कीते कौल नभायां ॥

इस माया जाल बछाया,

त्रैलोकी गी भरमाया,

तुमी रोई रोई नई पछतायां,
ते अटल सिंहासन पायां ॥

सारे बिषे-बकार मटाई लै,
पंजै डाकू बन्दी पाई लै ।

पर तीर नशानै लायां,
ते समता छेज बछायां ॥

जिन्ना मनै गी सान चढ़ागा,
उन्ना अगड़ा अगड़ा जागा,

तूं सुत्ते भाग जगायां,
जाई ब्रह्मानन्द पुछायां ॥

भजन ७

जे सुख-भण्डार भरना ई,
तां दुनियां गी भुलान्दा जा ।

मनै मश्टण्डे बैरी गी,
दिनो दिन बन्दी पान्दा जा ॥

परम पदवी नि हत्था जान देनी,
कर अटल निश्चा ।

जियां बी होयै वेड़ा पार,
भव-सागर थीं लान्दा जा ॥

मुवन चौदां बरासत लै,
ते माया दा बी बन स्वामी,
ब्रह्मानन्द त्रैलोकी दी,
समराटी गी पान्दा जा ॥

भजन ८

जदूँ गरभ-जून बिच आई,
बार औन्दे रोई करलाई,
तां गोदा लेई-लेई दाई,
में डूठां चुंगन लाई ॥

बिन्द मिट्टे बोल जां बोले,
लगी खेडन गुड्डी-पटोले,

=====

कीती एडी वे परवाही,
 रेही साथें बिच ललचाई ॥
 लगा जोबन देन लोआरे,
 होए घर-घर स्हेलड़ चारे,
 सब बैठियां दाज बनाई,
 में चरखै तन्द निं पाई ॥
 मिगी मापें लाड लड़ाए,
 पर, कारण देन पराए,
 जदूं होन लगी कड़माई,
 मिगी थर-थर कम्मनी आई ॥
 हुन आई पुज्जी घर जान्नी,
 मेरा चुक्का दाना-पानी,
 बिच वेदी बैठी जाई,
 तां मूल मती घबराई ॥
 जां बखलें दै बस पेई,

तां करी घुमाइयां गेई,

पर खसमै नई मूं ह लाई,
 औ तलियां मली पछताई ॥

मेरा औन होआ कित कारी,
 बनी दिन-दिन औगन हारी,
 हुन प्रभु बिन कोई नि सहाई,
 रोई कुसी सुनामां जाई ॥

ए दुनियां गोरख-धन्दा,
 औखा निकलन ब्रह्मानन्दा,
 मुड़ी फसी चुरासी जाई,
 में कीती करनी पाई ॥

भजन ६

तूं प्रेम दी ताड़ी लायां,
 ते मनै गी साफ बनायां,
 एदे धोखे बिच नि आयां,
 हिरदे बिच जोत जगायां ॥

कर दिलै दी साफ मरोड़ी,
 करी सकना जित्थों तोड़ी,
 ते सिद्धै रस्तै जायां,
 छल-छिहर दूर नसायां ॥
 जिस कीती खूब सफाई,
 उस अन्दर भांकी पाई,
 तुम्मी दुनियां दिला भुलायां,
 ते कीती मुजरै पायां ॥
 तेरा आतम अति पवित्तर,
 सौ मित्तरें दा बी मित्तर,
 पर लाइयै तोड़ नभायां,
 नई सफरें बिच घबरायां ॥
 जेड़े आतम दरशन पान्दे,
 गीता बिच कृष्ण सुनान्दे,
 ओ सिर-सिर बाजी लान्दे,
 तुम्मी अपना सीस कटायां ॥

सब करनी काली होई,

में डुसकी डुसकी रोई ॥

बिच होशा सुरत निं आई,

नां कीती नेक कमाई ।

नां तीरथ बरत बी कोई,

में डुसकी डुसकी रोई ॥

कड़ी मुशकां बखलें नेना,

उत्थें औग जबाब निं देना,

हुन नरकै जुगड़ी होई— में०

औं देहै गी रेही सजान्दी,

नित्त सुरखी-पौडर लान्दी,

फिरी वैतल बनी बतोई— में०

तदू गिनी-गिनी पैर टकाए,

मन भान्दे खादे लाए,

नई नजरी रक्खेया कोई— में०

जद मौत आई सिर गरजी,
 सब प्यारे होए अलगरजी,
 इक पल बी नई बलगोई— में०

भट जाई चिखा पर चाढ़ी,
 त्रोड़ी तीला मारी ताढ़ी,
 औं जली-बली कोले होई— में०

परलोक होआ सब गन्दा,
 अजें सुत्ता एं ब्रह्मानन्दा,
 हुन हरि बिन होर निं कोई,
 में डुसकी डुसकी रोई ॥

भजन ११

सदा सफरी मुसाफर, नां
 कुतै घर-घाट डेरा ऐ,
 कुसै दा तूं नई बैरी,
 नां साथी कोई तेरा ऐ ॥

ए अक्ख खुलदे गै भट-पट,
 तुद सिरै पर कूच दिखना ऐ,
 बगानी इस सराई बिच,
 पल-भल दा बसेरा ऐ ॥
 ऐ जिस देसै दा तूं वासी,
 नां उत्त न्हेरा, नां तरकालां,
 नि राती दी नशानी गै,
 सदा चानन सवेरा ऐ ॥
 तूं सुखिये दा बी सुखिया एं,
 ते शाहें दा बी शाह तूं एं,
 बजोगी ते कंगाली दा,
 सरासरं बहम तेरा ऐ ॥
 अखल ब्रह्माण्ड दा स्वामी,
 ए सूरज लो तेरी बरतै,
 सकल जीवें दा फल दाता,
 माया पर राज तेरा ऐ ॥

चराचर बिच ब्रह्मानन्द,

इकै तूं गै व्यापक एं,

जे अकख खोली जरा दिक्खें,

तां तुद बिन होर केड़ा ऐ ॥

भजन १२

ए तेरा अंग-अंग बखला,

ते जोवन बी पराया ई,

प्रभु दा मेल करने गी,

बनी मेहमान आया ई ॥

भव सागर गी तरने गी,

ए सर्वांगी मिली नौका,

जे इसदी तूं कदर जांती,

तां वेड़ा पार लाया ई ॥

ए सब गड्डी दे साथी न,

इन्हेंगी मत समझ अपना,

नां झूठे प्रेम दा नाता,

कुसै अज तक नभाया ई ॥

सराई कर गुजर अपनी,

ते इस जीने गी लेखै ला,
छली कपटी मनै ने गै,

जगत सारा भुलाया ई ॥

अगन ज्ञानै दी बाल ऐसी,

दगध कर अपने करमें गी,
ए गीता बिच साधव ने बी.

अर्जन गी सुनाया ई ॥

जे बुद्धि होई पवित्तर जा,

सुखें दी खान खुलदी ऐ,
चुरासी फेर तां मिटदा,

ए वेदें गान गाया ई ॥

तुगी पुन्नैं दे फल थोए,

ते सुत्ते भाग जागे नी,

तू ब्रह्मानन्दा जानी लै,

परम पदवी गी पाया ई ॥

भजन १३

करी लै त्यारी, तू करी लै त्यारी,

ए दुनियां दुरंगी, निं करेयां प्यारी ॥टेका॥

पैण्डे दुराडे ते जाना जरूरी,

हाकम न डाडे, निं चलदी गरूरी,

बखलें दा बासा ते बस्ती न्यारी ॥करी लै०

जां चित्रगुप्तै ने पुच्छना ई लेखा,

उत्थें कुसै दा निं चलना भुलेखा,

मेटी निं सकदा कोई करम-अग्यारी ॥करी लै०

बुरे कम्में गी नई तू साथी बनायां,

जे तू लाई बैठां तां पूरी नभायां,

छोड़ एकी दुनियां, ए मैली ऐ सारी ॥करी०

दिख्खी गुरें प्रीती किरपा दी वर्षा कीती ।

तां मैले इस मनै गी जां सान चढ़ाया ई ॥

निरलेपी अन्तः करनै जग दी त्यागी सत्ता ।

करमें दे होये नवेड़े शुभ महरत आया ई ॥

भोगें दे पर पटोये छुड़के पुराने चसके ।

निर कांखी होई डेरा तुरिया जमाया ई ॥

सोगें भरा समुन्दर, सुखें च जाई समाया ।

सुत्ते दे भागें जागी, डंका बजाया ई ॥

दुई दुराडी नठ्ठी जकड़े दे बन्धन चुट्टे ।

माया ने हार मन्नी, डेरा पुटाया ई ॥

जीन्दें होई खलासी, नित्त रोन-धोन चुक्का ।

मुक्के निं सब फजीते प्रण तोड़ नभाया ई ॥

सचियां परीतां लाइयां,

फाइयां गला लुआइयां ।

इत्थें गै ब्रह्मानन्दा परम धाम पाया ई ॥

भजन १६

राही मुसाफरा सुन,

बिंद ध्यान तां बी लाई लै ।

तेरा देस अत्त दुराडा,

किज खरचै जोगा पाई लै ॥

रस्ते'च कई जोआड़ां,

डण्डकारां औनियां निं ।

सुखनां सरीनियां कर,

गुर देवते मनाई लै ॥

खूनी लुटेरे डाकू,

चोरें दे उत्थें पैहरे ।

जीन्दे निं जान दिन्दे,

मुठ्ठी कलेजा पाई लै ॥

बनी सूरमा सुजाखा,

दिन रात दौड़ना ई ।



रस्ते च नई खड़ोना,

बाजी सिरै दी लाई लै ॥

न्हेरें बलाई लक्खां,

अनगिनत अड्डो खोड़े ।

ठिड्डे बचाने गितै,

ज्ञानै दी लो जगाई लै ॥

बन्नी लक उठी खड़ोयां,

सहारा गुरें दा लेइयै ।

लड़गा दुहाथी जे,

ब्रह्मानन्द मुक्ति पाई लै ॥

भजन १७

नस कुड़े तौली नस कुड़े,

दंदियां रीकी नई दस कुड़े ॥टेका॥

जीयां उबड़ी उबड़ी बदना ऐं,

तू हरि भजन थीं लजना ऐं,

मीरां बी दर्शन पाया सा,
उस्सै चाली तुम्मी तुप्प कुड़े ॥

भीलनी राम रभाये से,
जूठड़े बैर खलाये से,
रज्जी रज्जी दर्शन पाये से,
तुम्मी ते पिम्मने चुक कुड़े ॥

शाम दी रीत न्यारी सी,
नरसी दी प्रीत प्यारी सी,
तां ओदी हुण्डी तारी सी,
ब्रह्मानन्दै गी पुच्छ कुड़े ॥

भजन १६

आपू' गी आपू' भुल्लिए,
तू' हरान होई गया ।
ठगों दी बस्ती बस्सियै,
बरान होई गया ॥

जड़ देहै गी अपना,

स्वरूप जानेयां,

एदी सजावटें च तेरा,

रात दिन गया ।

जीयां दुह^२ च पानी,

इक जान होई गया ॥

विषये गी दिक्खी दिक्खी,

लालचै'च आई फसा ।

दीये शा पख्खरें दू,

वांगू बिन्द नि नसा ।

अकखीं गी तेरी मूरख़ा,

जरकान होई गया ॥

करी पुन्न पाप सुर्ग

नरक भोगदा फिरें ।

तृष्णा दी डोरी बभियै,

सदा जीयें मरें ।

करनी च फसी जीन्दे जी,

मसान होई गया ।

सत संगती च पेइयै,

भलेयां करी बचार ।

बाहरै दे परदे चुक्की,

अन्दरै गी भांकी मार,

ब्रह्मानन्द मुक्ति मिलग,

जेलै ज्ञान होई गया ॥

भजन २०

मिगी तां समझा बिच आया ई,

जां सदगुरें भेत सुनाया ई ॥टेक॥

घमेहार मिटी गी चक्र चढ़ान्दा,

भांडे बखो बख बनान्दा,

किसम किसम दे रंग सजान्दा,

उस इक अनेक बनाया ई ॥

जीआं सुन्नां लेई सुनयारे,

इक इक बन्धे घड़े न्यारे,
जेल्लै दिक्खे परखनहारे,

सब इक्कै मुल्ल विकाया ई ॥

जां जुलाहे ताना तनेयां,

पर जिस वेल्लै रेजा बनेयां,
सीता दरजी नै मन मनयां,

सूत्तर सब रमाया ई ॥

पखरू पखेरू ते नर नारी,

देव राज ते दीन भिखारी,
हर हर विच ओ इक्कै आपूं,

ब्रह्मानन्द समाया ई ॥

भजन २१

लाई लै लगन मनै दी,

जे प्रभु गी पाना ऐं,

जिन्दु दी बाजी रखियै,
हुन सिर वचाना ऐं ॥

सूरमा सुजाखा बनी,
लड़ दुहाथड़ी ।

घायल होआ दा नरिसियै,
की नक्क बढाना ऐं ॥

इस लोक ते परलोक दे,
भोगें दी आस छोड़ ।

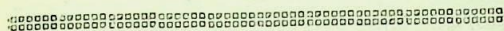
सुखें भरी जे ब्रह्मानन्द,
मुक्ति चाहना ऐं ॥

भजन २२

मिगी दास अपना समझियै,
प्रभु करो दया ।

दीनें दा नाथ जानी,
तेरा आसरा लेया ॥

भोगें दी लालसा'च,
 पेई तुगी बसारेया ।
 सारा जनम देहै दे,
 खान पान च गैया ॥
 दिखे नई पुन्न पाप,
 कीते करम कवल्ले ।
 तूं माफ नई करें,
 तां नरक भोगना पेया ॥
 सुनी तेरे दरबार दी,
 मैहमा अपार ऐ ।
 बार बार वेद बी,
 आखी इयै रेहा ॥
 कीता नई ध्यान,
 होई शर्मिन्दगी बड़ी ।
 इस वेल्लै होर कुन ऐ,
 दयावान तुद नेआ ॥



मेरी किशती डामा-डोल,

धुमन घेरें'च फसी ।

माया दी नेहरियें दा,

चुफेरै रौला पेआ ॥

जको तककें गोआई उमर,

घोन दिन लगा ।

ब्रह्मानन्द चाहें तू,

तां बेड़ा पार होई गया ॥

भजन २३

दुनियां दी लाज छोड़,

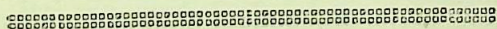
ते प्रभु गी पाई लै ।

चौरासी चा निकलने दी,

खुशियां मनाई लै ॥

दीये गी दिख्खी पख्खरां,

जलियां सने' परें ।



तुम्मी इयां तली पर अपना,
सिर टकाई लै ॥

भव सिन्धु गी तरने दा,
ई मोरचा लगा ।

घायल होने गी प्रेम भरे,
तीर खाई लै ॥

भोगें च कइ जनम,
सारी रास लुटाई ।

एकड़ै ते होश करी,
किज कमाई लै ॥

सुखें भरोची मुक्ति ने,
रचेआ स्वयंबर ई ।

माया दी हार दस्सियै,
जयमाल पाई लै ॥

चौरासी थीं छुड़क,
करी करम नवेड़ा ।

ब्रह्मानन्द समाराटी दा,

छत्तर झुलाई लै ॥

भजन २४

अमरत चवै तला भरोचन,

उठदी छेड़ समानी ऐं ।

गुरें दी दया होयै जे पूर्ण,

पान्दा पद निर्वानी ऐं ॥

उछली नदी सुका समुन्दर,

गती निं जा बखानी ऐं ।

चन्न सूरज ना तारे उत्थें,

ना दिन रात नशानी ऐं ॥

बाजे बजन सतार बंसरी,

अमरत मिठठी बानी ऐं ।

बिन गासै दे बिजली चमकै,

बिन बरखा गै पानी ऐं ॥

खड़ोई ब्रह्मा विष्णु शङ्कर,
गान्दे गुन बखानी ऐं ।

ब्रह्मानन्दा रमज फकीरी,
विरले कुसै ने जानी ऐं ॥

भजन २५

प्रभु हर पत्तरै'च तेरा,
चमतकार ऐ ।

पर असली विमल चरण,
जेड़ा मोक्षसार ऐ ॥

मैहदीं च लाली वांगूं,
रग-रग समाई रेया ।

धरती अकाश विश्व,
सब दा अधार है ॥

वेदें बी नेति-नेति आखी,
मौन धारेआं ।

लखी निं सकेया कोई,

तेरी मैहमा अपार है ॥

जो जो दुखी दलिदरी,

शरना आई पे ।

तेरी सहायता ने,

होआ बेड़ा पार है ॥

दया करी मी अपनै,

दरबार रखेयां ।

ब्रह्मानन्द तुगी बार बार,

नमसकार है ॥

भजन २६

प्रभु तेरे चरणों च,

आई में पुकारेयां ।

जीआं बी होयै प्रीत मेरी,

तोड़ चाड़ेयां ॥

सारा जनम भोगें च फसी,

तुई बसारेया ।

भुल्ले कुत्थें गी रस्तै,

पायां भायें पछाड़ेयां ॥

चवख्खीं दुड़ाई नजर,

कोई आसरा नई ।

हुन अपनी गोद लैयां,

भायें नरक साड़ेयां ॥

पिच्छा रेहा ई दूर,

नेडै अन्त आई गयां ।

औखा बड़ा ई एकड़ा,

बेल्ला सुवारेयां ।

अध मभाटै घुम्मनें च,

किशती डलकदी ।

ब्रह्मानन्द औरगनें भरी,

डुबदी गी तारेयां ॥



भजन २७

कृष्णा तेरी प्रीता,

उपरा घमाई आं ।

बंसरी सुरीली सुनी,

दौड़ी आई आं ॥

मुट्टी कलेजा पाई,

सिर तली पर रखेआ ।

जीने दी आस लोक,

लाज छोड़ी आई आं ॥

चरणें च लाई रखेयां,

परें निं छंडेआं ।

जकड़े जंजीर नातें दे,

तरोड़ी आई आं ॥

दुखें'च परखी दिखेआ,

साथी कोई नई ।

इस मनै मश्टंडे गी,

मरोड़ी आई आं ॥

कई' जनम पिच्छें बी इस,

धोखें च रहखेया ।

एकड़ै ते बन्दी खाने,

टोरी आई आं ॥

घर घराट नां नगर,

त्रौनें गी छोड़या ।

ब्रह्मानन्द सबनें थार्यें दा,

मूं ह मोड़ी आई आं ॥

भजन २८

प्रभु तेरी सबल्ल्ती नजर,

ਪਾਪੇਂ ਸ਼ਾ ਬਚਾਨ੍ਦੀ ਏ ।

भव सागर च डुबदें दे,

वेड़े पार लान्दी ऐ ॥

बजोगी दीन दुखिये बी,
 सुखें दे भूलें भुलदे न ।
 कईं जनमें दे विछड़े दे,
 भुल्लें गी रस्तै पान्दी ऐ ॥
 नवेड़ा कर्म दा करियै,
 महां पापी तरी गे,
 पवित्तर परम प्यारी ए,
 गीता बी सुनान्दी ऐ ॥
 जोआला ज्ञान दी जगदी,
 चौरासी चकर मिटदा ऐ ।
 माया दे जाल त्रुटदे न,
 जनम मरन छुड़ान्दी ऐ ॥
 मन दौड़ें शा फामा पेई,
 चुपीता होई खड़ोन्दा ऐ ।
 बुद्धि बी तां बिषे छोड़ी,
 समाधि बिच समान्दी ऐ ॥

परम जोति दे चमकारे,

सुख भंडार भरदे न ।

ब्रह्मानन्द माया बी,

मुड़ी नईं टपले पान्दी ऐ ॥

भजन २६

राहिया कुस देसा दा आयां,

जाना कोकड़े थारै गी ।

जेड़े कीते करम कवल्ले,

कुत्थें सुटना भारै गी ॥टेका॥

राखी वेल्लै रेहां सुत्ता दा,

खेतर चिड़ियें चुगेआ ।

औत्तर जानेयां मेरे मना,

तूं की नईं डवरी डुवेआ ।

अऊं किचरक वेइयै रोआं,

तुगी करमें दे मारे गी ॥

=====

तू त्रैलोक्यी गी खाई समाहया,
 सदा रेई भुख सलगी,
 घर घर लीकां लाइयां नी,
 पर तेरी चिखा नई बलदी ।
 रोइयै सिर सिर पिट्टां अऊं,
 मना तुगी औगन हारे गी ॥
 लालें दा बपारी होइयै,
 ठीकरीयां ठनकाइयां ।
 पापी पीङ्ग लोआरें चाढ़ी,
 सुत्तियां कलां जगाइयां ।
 दुर फिट्टे मूंह ई मेरे मना,
 तुगी ठग बनजारे गी ॥
 बिषे बलासैं उमर गोआई,
 सारी रास लुटाई ।
 जो जम्मेयां सो कालै खादा.
 तेरी मौत नई आई ।

तू दिन दिन पाये स्यापे,

ब्रह्मानन्द बचारे गी ॥

भजन ३०

हुन ते जाग सुते देया राहिया,

बेला नेड़ै आया ई ।

तू ते जाना देस बगानै,

नां कोई साथ बनाया ई ॥टेक॥

ना जप ध्यान प्रभु दे लगगा,

ना सत संगत कीती ।

टवरै दे गै बैल बने दे,

उमर गोई सब बीती ।

इक इक करनी काली होई,

पापें बिच रंगाया ई ॥

जक्को तक्के उमर गोआई,

कदम नई अगों रखेया ।

जो जो करनी इत्थें कीती,

अन्त नखेड़ा होना ।

जां बखलें दै बस्स पेआ तां,

पौगी सिर सिर रोना ।

तौला पुट्ट कन्नें दे पड़दे,

ब्रह्मानन्द सुनाया ई ॥

भजन ३१

बांके छैल बिहारी कन्ने,

सचियां प्रीतां लाइयां नीं ।

पापें रली विदाई मंगी,

पुन्नें पींगां पाइयां नीं ॥टेका॥

अवधी ज्ञानै दी होई पुरी,

तीर नशानै लाया ।

खाइयै हार अविद्या नस्सी,

जम्मन मरन मटाया ।

हुन ते चारै चक जगीरां,
 वाह वाह बेपरवाहियां नीं ॥
 अन्तः करण होआ निरलेपी,
 करमें कूच बजाये ।
 जग दी सत्ता गेई गोआती,
 ज्ञान मोआते लाये ।
 जिगरी कूड़ा करकट जलेआ,
 अन्दर बाहर सफाइयां नीं ॥
 पलकें दे पड़दें दै अन्दर,
 त्रैवै लोक समाये ।
 माया दा बी साक नुष्टा,
 समता मंगल गाये ।
 अन्दरा आतम दर्शन पाया,
 धन्न धन्न कठन कमाइयां नीं ॥
 छाल छड़प्पे छुड़के सारे,
 परलै पार पजोआ ।

तां जीन्दे गै ब्रह्मानन्दा,

अटल सहासन थोआ ।

होये सद्गुरु परम दयालु,

लाइयै तोड़ नभाइयां नीं ॥

भजन ३२

पुन्नें दे फल हास्से,

पापें रोने पाये नी ।

उयै किस्मत वनियै बरतन,

जे किज लेख लखाये नी ॥टेका॥

जो हौले सो चढ़े तरक्कड़ी,

पूरे नई तुलोन्दे ।

जल कायें गी छप्पड़ हंसैं,

मान सरोवर थोन्दे ।

उच्चि करनी दे फल इयै,

मोती चुगन लाये नीं ॥

सिरें पराङ्गे तृष्णा गजदी,
 छातीं पर्वत टपदी ।
 मित्र वनियै समता पान्दी,
 वैरी बनी त्रटदी ।
 तां गै नीच जूनियें आई,
 हाहाकार मचाये नी ॥
 पुत्र समूह इस जीवै दे,
 जां सन्मुख आई खड़ोन्दे ।
 तां ए साधक रसतै पौन्दा,
 पिछले पाप कटोन्दे ।
 गेई साङसती सिर लाहन्दी,
 सुख भंडार भराये नी ॥
 फारगती माया गी दित्ती,
 ज्ञान बरासत पाई ।
 जग जेला शा होई खलासी,
 कीती मुजरै आई ।

हुन ते समराटी दे ब्रह्मानन्दा,
चौर झुलाये नीं ॥

भजन ३३

धन्न धन्न शंकर भोले नाथ,
जटें पर गंगा धारी ऐ ।
लाइयै डीक हलाहल पीता,
चौरे पैहर खुमारी ऐ ॥

भस्म चिखा दी जिन्दु लेपी,
हार सपें दे पाये ।
लक्कै गी मृगछाल पलेटी,
साथी भूत बनाये ।
दुति दा चन्न मत्थे पर चमकै,
बुड्डा बैल सवारी ऐ ॥

शमशानै बिच करन क्रीड़ा,
अक्क धतूरे खन्दे ।

पर अपने प्रेमी भगतेँ उप्पर,

भट पट खुश होई जन्दे ।

भरी भरी चाढ़न भंग प्याले,

गौरां संग प्यारी ऐ ॥

कन्नें कुण्डल सोबन ते,

तरसूल हथै बिच सजदा ।

तांडव नाच खुशी दा करदे,

डम डम डमरू बजदा ।

शम्भु त्रैलोकी दे नाथ,

तुसें दी छवि न्यारी ऐ ॥

भैरो बनी द्वार पाल,

दरवाजै खड़ोई दिखदा ।

लेई लेई जन्दे सेवक बर,

जो भाग होयै जिस जिसदा ।

ब्रह्मानन्दा नईं कर आल माल,

परलोक त्यारी ऐ ॥

भजन ३४

ए मन नित नित अड़ियां करदा,
 इस खिन टिकन निं भाखा ई ।
 एदे सबज बाग नईं दिखेआं,
 बिल्ला दुदूँ राखा ई ॥टेका॥
 अस्वर चढ़ियै टाकी लान्दा,
 नमें चलत्तर दसदा ।
 दूयें दै सिर भांडे भनदा ,
 आपूँ कोठे टपदा ।
 इस गी बिन अक्खीं मत समझें,
 ए तां अति सुजाखा ई ॥
 आप रशें पर आवै जेल्लै,
 संगल तरोड़ी चलदा ।
 रग रग दै विच नौसर बाजी,
 छल छिद्रा नईं टलदा ।

रौहन्दा लप्पड़ छड़ाकें राजी,
 ना इस अंग ना नाता ई ॥
 बाक्क परें दै उडरन जानै,
 खिन खिन फंग सुआरै ।
 साधें गी वी चोर बनान्दा,
 आपूँ धाड़े मारै ।
 छाल छड़प्पे इसी प्यारे,
 कोई गुर पीर निं जाता ई ॥
 रोम रोम बिच वासा इसदा,
 जाल चवक्खीं तनेयां ।
 इन्द्रियें दी फौज बनाई,
 सब दा अगुआ बनेयां ।
 जेल्लै सिर पर आइयै बरती,
 ब्रह्मानन्द पछाता ई ॥
 भजन ३५
 राहिया सतसंग बिच पेइयै,
 जीना सुफल बनाई लै ।

पगड़ी हत्थ ज्ञान कटारा,

जम दे त्रास मटाई लै ॥टेका॥

आतम दर्शी रिखी मुनी बी,

इस महिमा गी गांदे ।

कन्नें वेद पुरान शास्त्र,

सारे रली सुनान्दे ।

तुम्मी प्रभु दे चरनें लग्गी,

दिन दिन प्रेम बधाई लै ॥

बिन सत संगत हरि भजनै दै,

चार चुफेरै न्हेरा ई ।

साधन सुफल बनाने बाजों,

पार करग तुई केड़ा ।

पिछले केई जनमें दा मैला हिरदा,

खुम्ब चढ़ाई लै ॥

सत संगत बिच औने करियै,

दुख कसाले चुकदे ।

गर्भ जून दे अगों आले,

पिट सिआपे मुकदे ।

तौले सुत्ते भाग जगाई,

ज्ञान बरासत पाई लै ॥

जो रसतें दा पौन कुरसतें,

भुल्ली जोआड़ें जन्दे ।

तां बनमानुं भट उनें गी,

जीन्दें रड़की खन्दे ।

तुम्मी जनम जनम दे भीलें कोला,

जान बचाई लै ॥

पापी, नीच, दुष्ट, नर, नारी,

काणो गिल्लडे कुबडे ।

लूल्हे, लंगड़े, चोर, उचक्के,

सत संगत बिच सुधरे ।

तुम्मी भट पट ब्रह्मानन्दा,

वेड़ा पार कराई लै ॥

भजन ३६

तेरी लगन लगी गोई शामा ।

हुन मिगी निं मना बसराना ॥टेका॥

तेरी बंसरी दे बोल न्यारे,

मिगी मिठे मिठे लगदे प्यारे ।

सुनी नैन प्रान बी हारे,

दस हुन कुत पासै जामां ॥

जदू' द्रोपदी रोई करलाई,

ओदी लाज सभा'च बचाई ।

अम्मी शरन तेरी पेई आई,

हुन लड़ निं मेरा छुड़काना ॥

जेड़े साक सैन निं प्यारे,

दिक्खे मतलब दे बनजारे ।

भूठी दुनियां कूड़ पसारे,

कुसै तोड़ निं साथ नभाना ॥

मेरा जीन होआ हुन भारा,
 तुदै करना ई पार तोआरा ।
 ब्रह्मानन्द तेरे दर बाभूँ,
 दूआ होर निं कोई ठकाना ॥

भजन ३७

प्रसु दर्शन दी तरेयाई,
 करां अरज तेरै दर आई ॥टेका॥
 हुन रखी तेरे पर डोरी,
 सारे जग दी प्रीत त्रोड़ी ।
 तुम्मी मूंह नईं छोड़ेयां मोड़ी,
 मिगी चरनें रखेआं लाई ॥
 अऊं दीन अती दुखयारी,
 मेरा औन कुसै नईं कारी ।
 विच पापें उमर गुजारी,
 नां कोई कीती नेक कमाई ॥

सुन बिनती दीन दयाला,

तू सब दा बखशने आला ।

मिगी भरी देआं प्रेम प्याला,

तेरी बनी भिखारन आई ॥

जिस तुद कन्ने प्रीतां लाइयां,

उस सुरगें पीगां पाइयां ।

ब्रह्मानन्दा तोड़ नभाइयां,

होई अन्दर बाहर सफाई ॥

भजन ३८

आया नेड़ै सौहरै घर जाना,

पेया रुठड़ा कैत मनाना ॥टेका॥

छिड़ै देस ते साथ बगाने,

दिखी रोई पे नैन नमाने ।

सिखे हार संगार निं लाने,

उत्थें खसमै निं मूल बुलाना ॥

मेरा जिगर कम्बी पेया डरदे,

अल्ले फेफड़े फर फर करदे ।

पौनी निडक सहासन चढ़दे,

जेल्लै दिखग ओ मैला बाना ॥

कीती दिन दिन बे परवाही,

नित खेड़ें उमर गोआई ।

जेल्लै साहड़सती सिर आई,

हुन कुत लेखै पछताना ॥

की रोन्दे नैन नरासे,

आपूँ उडरी उडरी फाई फासे ।

हुन दिखडन लोक तमाशे,

ब्रह्मानन्द निं मिग ठनाना ॥

भजन ३६

आपूँ गी अपने अन्दरा,

तूँ नईं पछानेयां ।

जंगलें पहाड़ें कन्दरें,

तुपना नमानेयां ॥ देका ॥

धोखे दी इस सराईं गी,

अपना बनाया ।

कईं बारी इत्थों निकलेआं,

पी परती आया ।

तुई किन्द नईं आई,

सदा दे धक्के खानेयां ॥

बनी कदें तूं देवता,

बिच अपसरें रमें ।

कईं बारी उडरें ते,

जां पशु बनी चरें ।

पर लाज नईं आई तुगी,

ओ वे ठकानेयां ॥

कईं बारी तुद सिरै दे,

उप्पर चौर भुल्लेआ ।

कदें तूं दाना दाना,

मंगने गी डुल्लेआ ।

पर आई नईं शर्म,

नक्कै गी लाज लानेयां ॥

करमें दे चक्करै चा नईं,

जिचर तूं नठ्ठेआ ।

तां तक सिरा नईं जनम,

मरन जाग कट्टेआ ।

ब्रह्मानन्द मुक्ति मिलग,

जद स्वरूप जानेआं ॥

भजन ४०

सतसंगती पेया तां,

वेड़ा पार होई गेआ ।

भजनै गी लगी मन,

सुखें दा हार होई गेआ ॥टेका॥

मन्दरें'च जाई जाई,

सारै पुच्छेआ ।

तीरथें बी दौड़ी दौड़ी,

हारी हुटेआ ।

फामा पेई पेइए बैरी,

चित्त खड़ोई गेआ ॥

पक्के पैरें जेल्लै,

सिर तली पर रखेआ ।

गुरुएँ कीती दया,

ओदा भेत दस्सेया ।

अपने आप अगों दा,

पड़दा चकोई गेआ ॥

भलेयां होये नबेड़े,

माया चकर मिटेआ ।

फादल पे फान्दी ने,

नईं पिछड़ा खिच्चेआ ।

बेरङ्गी दे रङ्गे अन्दर,
वाहर रङ्गोई गेआ ॥

पिल्लली कीती करनी सब,
लेखै लाई लेई ।

सिर दित्ता तां वाजी वी,
मुजरै पाई लेई ।

हुन ते ब्रह्मानन्दा,
परला पार थोई गेआ ॥

भजन ४१

पापें भरी पतंग,
जेल्लै कटोई गेई ।

माया गी लगी गुड़कनी,
फर फर रोई पेई ॥टेक॥

फुरनें चित्तै गी छोड़ियै,
रस्ता पगड़ेआ ।

बासना ने घीसां कड़ी,
नक्क रगड़ेआ ।

चिनता बी जलदी भुजदी,
चिखा चनोई गोई ॥

वृत्ति दै अन्दर चमकन,
चानन लगी पेया ।

तमो गुनी मोहै दा तां,
मूंह भजी गया ।

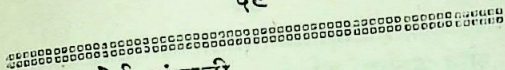
दूई बी दौड़ां-लान्दी,
जीन्दी फकोई गोई ॥

विषें वकारें रोन्दे,
ढेरे डंडे पुट्टे ।

पंजै बैरी पिटदे,
अरड़ां मारी उट्टे ।

ममता मित्ती मिलियै,
भलेयां बतोई गोई ॥

दुख कसाले भुल्ले,
सुखें दी खान खुल्ली ।



जढ़ा पटोई कंगाली,

हंगता बी पेई चुल्ली ।

इत्थें गै ब्रह्मानन्दा,

तां जीवन मुक्ति लेई ॥

भजन ४२

आतमा दे कन्नें,

जेल्लै परीत लाई ।

करमें दे होये नवेड़े,

ज्ञानै ने लो जगाई ॥टेका॥

दुखें शा होई खलासी,

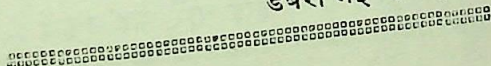
नित रोन धोन चुक्का ।

सुरगें दी आसा मेटी,

नरकें दा त्रास मुक्का ।

दुबधा बी कन्ना पगड़ी,

डबरी नेई डबाई ॥



मोह मलीदा करियँ,

अन्दरा धरीड़ी सुटेआ ।

चिन्ता चड़ेला दा बी,

पगड़ी चूँडा पुटेआ ।

घबराइयै दुसकी दुसकी,

माया बी डलबलाई ॥

बाहरा धलोफां छोड़ी,

अन्दरै दा पारस पाया ।

कई जुगें दा भुल्ला,

बिछड़ियै घर आया ।

जनम जनम दी सुत्ती,

किसमत लेई जगाई ॥

कालै बी कूच कीता,

नठ्ठा बिगल बजाई ।

आकी नी कोई लबदा,

होई चारै चक सफाई ।

हुन ते ब्रह्मानन्दा,

अटल जगीर पाई ॥

भजन ४३

धन्न धन्न गान्धी बुड़े बापू,

सुत्ता देस जगाया ई ।

पगड़ी चरखा चक्रर सुदर्शन,

मुलख अजाद कराया ई ॥टेका॥

कई बारी तूं जेल्लें दै बिच,

पेइयै कैदी कट्टी,

लोक सेवा दै कारन,

जेल्लै कठन तपस्सेआ दस्सी ।

फरंगी निश्चा तेरा दिक्खी,

मूल मता घबराया ई ॥

सर्व शान्ति मन्तर दित्ता,

जग दी सोभ लेई ।

बैरियें जतन बतेरे कीते,
रक्ती पेश निं गोई ।

उनेंगी फौजें सनें नसाई,
समुन्दरें पार कराया ई ॥

बुढ़े मरद जनानियें बच्चें,
गोलियां सोटे खादे ।

कई सोहागनीं विधवा होइयां,
दिन दिन दूने जागे ।

दिल्ली लाल किले पर जाई,
ब्रह्मा भंडा लाया ई ॥

गुलामी चा छुड़काई जनता,
अटल स्वराज दुआया ।

सुख पाने दा बेल्ला आया,
आपूँ सुरग सवाया ।

गान्दे घर घर तेरी मैहमा,
ब्रह्मानन्द सुनाया ई ॥

भजन ४४

आतमा दे कन्नें,
 जेल्ले पेरीत पेई ।
 चित्तर गुप्त बी नठ्ठा,
 अपनी लेइयै वेही ॥टेका॥
 त्रैवै ताप चुक्के,
 दुख कसाले भुल्ले ।
 ममता बी हारी हुट्टी,
 सुखें दे द्वार खुल्ले ।
 दूई बी सनकप्पड़ी,
 चिखा चढ़ी गई ॥
 क्रोध कड़ियें कस्सेआ,
 मोहै गी देई धक्के ।
 तृष्णा दी तार बुट्टी,
 माया दे जाल कट्टे ।
 दुवधा बी तलियां मलदी,
 सुत्ती दी गई सेई ।

नाते नकेलां त्रोड़ी,
 छिन्दै होई खड़ोते ।
 ज्ञानै दा खुम्ब चढ़ेया,
 जिगरै दे दाग धोते ।
 गैत्री खजाने खुल्ले,
 खू कङ्गाली पेई ॥
 पापें दे पर पटोये,
 अन्दरै दे छोड़ी लागे ।
 विपता गेई बतोई,
 सुत्ते दे भाग जागे ।
 हुन ते ब्रह्मानन्दा,
 जीन्दे गै मुक्ति लेई ॥

भजन ४५

नईं करेयां वे परवाइयां,
 अऊं शरन तेरी हुन आइयां ॥टेक॥

तू अन्दर बेई बेई भांकियां मारें,
 अऊं तुपदी फिरां जंगल पहाड़ें ।
 तुगी धन्न धन्न मेरे आ साईयां ॥

आई फसी अऊं देस बगानै,
 साथ प्राये कोई पीड़ निं जानै ।
 तलियां मली पछताइयां ॥

फर फर रोन्दे नैन नमाने,
 अजें बी नईं तू सार पछाने,
 अऊं की तुद टपलें पाइयां ॥

कालियें करनियें पाप चमेड़े,
 नित नित पुटने पौन्दे डेरे ।
 नित नित नौमियां जुदाइयां ॥

बड़े बड़े तुद औगन हारे,
 भव सागर बिच डुबदे तारे ।
 ब्रह्मानन्दै अरजां सुनाइयां ॥

भजन ४६

जिनें हरि चरणें चित्त लाये,

उनें हसी हसी दर्शन पाये ॥टेका॥

जनम जनम दा कटेआ न्हेरा,

चानन चढ़ेआ चार चुफेरा ।

रज्जी रज्जी मंगल गाये ॥

माफ होइयां उन्दियां तकसीरां,

बिरसें पेइयां अटल जगीरां ।

सुरगें मैहल बनाये ॥

जड़ें सनें गे पाप पटोई,

जुगें जुगें दी मैल धनोई ।

अन्दर बार रंगाये ॥

दुख दुनियां दे गे गोआते,

नां बैरी ना रेह नाते,

नां अपने ना पराए ॥

सार प्रभु दी लेई पछानी,
 अन्दरा रग रग होई मस्तानी ।
 ब्रह्मानन्दा कौल नभाये ॥

भजन ४७

आपू' गी अपने अन्दरा,
 इयां पछानेआं ।
 तां तू' समझी लैयां,
 प्रभु गी जानेआं ॥टेका॥
 नाम रूप जगत ए,
 सारा गै मिथेआ ।
 इसै ने अपने पासै,
 तेरा ध्यान खिच्येआ ।
 जेल्लै तू' हसगी,
 अन्दरा दा धरीड़ी आनेआं ॥
 समुन्दरै दे पानियें ने,
 भेत रख्येआ ।
 आपू' गी बुलबुले दा रूप,
 बनियै दस्सेआ ।

पल भल होआ तां,

उस्सै बिच समानेआं ॥

कंठे कड़े मुरकियां,

सुन्नै दे नां रखे ।

सराफै सजाई अपनी,

हट्टी दै बिच दस्से ।

कठेआली पाई सारे,

सनेआरे गलानेआं ॥

घमेआरै घड़े प्याले,

मिट्टी चा बनाये ।

आवे दै बिचा कड्डियै,

न्यारे करी टकाये ।

भुवां तट्टी सारे,

मिट्टी बिच रलानेआं ॥

लेई लोहाई खंडू गी,

खडौने बनान्दा ऐ ।

दयाली पर दृष्टी अपनी,

कतारां लान्दा ऐ ।

बची खुची गी दूयै दिन,

खंडू रलानेआं ॥

कागजी गुलाब ए,

धोखे गी रखेआ ।

दना सुगन्ध नईं,

भलेआं ए परखेआ ।

इयां ब्रह्मानन्दै,

अपना रूप जानेआं ॥

भजन ४८

अंदरै दे अपने,

प्रभु गी पाई लै ।

सौ जीनें दे जीने दी,

खुशियां मनाई लै ॥टेका॥

नित्त नित्त धोखें बिच,

पेई बतोआ ए ।

कई वारी उजड़ी उजड़ी,

भी ठगोआ एं ।

रड़की खाने भील्लें कोला,

जिन्द छड़ाई लै ॥

इस मुसाफर खानै जो जो,

आये लटोई गे ।

नीन्दर प्यारी कीती,

भलेश्रां सतोई गे ।

सुर बीर त्रिखे,

पैहरे दार जगाई लै ॥

बखली इस सराई बिच,

रौन्दे पसोई पे ।

ढेरे पुट्टने वेल्लै,

रौंदे गै इत्थों गे ।

ए किज दिखी हुन ते,

निश्चा जमाई लै ।

अद्धी रातीं रोज,

कसतूरी बंडोन्दी ऐ ।

तानां देई घड़ाकदे गी,
बिन्द निं थोन्दी ऐ ।

तू ते एल्लै जागी,
भोल्लां भराई लै ॥

आतम दर्शन कीतें,
चक्कर चौरासी मिटदा ।

माया जाल त्रुट्टी,
भी नीं पिछड़ा खिचदा ।

ब्रह्मानन्दा कईं जुगें दे,
भाग जगाई लै ॥

भजन ४६

कुत लेखै मनुख तन पाया,
नईं हरि भजनै चित्त लाया ॥टेका॥

काली करनी पाप चमेड़े,
नित नित नौमें पुटने डेरे ।

कुस करने अन्त नवेड़े,
सब मतलबी साथ पराया ॥

भजन ५०

की सेई रेआं होश भुलाई,
 तेरी मौत सिरै पर आई ॥टेका॥
 हुन होने जंगल बासे,
 भुल्ली जांडन खिड़-खिड़ हासे ।
 इत्थों जाना पौग नरासे,
 नईं कीती नेक कमाई ॥
 पिछों पछताना किस कारी,
 आपूं पैर कोहाड़ी मारी ।
 हत्था दित्ता बाज डोआरी,
 पेया रोना पीड़ पराई ॥
 इत्थें रात गुजारन आयां,
 पेई भोगें बिच भरमायां ।
 हुन पेया अत्थरुं टमकायां,
 दित्ती सारी रास लुटाई ॥

बड़े पुन्नें दा फल पाया,
 जेड़ी थोई मनुख्खा काया ।
 ओ तलियां मली पछताया,
 जिस कदर नीं इस दी पाई ॥
 तूं हुन ते किज कमाई लै,
 इस जनम गी लेखै लाई लै ।
 अगें जुगड़े खरचे पाई लै,
 कालै देना बिगल बजाई ॥
 जेल्लै रेल्ला सीटी मारी,
 भट होनी कूच तयारी ।
 नईं नीन्दर करेयां प्यारी,
 ब्रह्मानन्दै देयां सुनाई ॥

भजन ५१

इक रात कट्टन तूं आया,
 सौ वरें दा जाल बछाया ॥टेका॥

बे बखता जां तू उठनां,
 तुगी नई जोआड़ें सुटना ।
 तेरा भाग मत्थे दा फुटना,
 कोई संग निं साथ बनाया ॥
 इत्थें चार चुफेरै नेहरा,
 अते पैछी रैन बसेरा ।
 तुम्मी पुटने पौना डेरा,
 जां दिन चढ़ने पर आया ॥
 तुगी रात गेई बसलान्दे,
 नई पिछले पाप जगान्दे ।
 गीता बिच कृष्ण सुनान्दे,
 तुई अजें बी होश निं आया ॥
 तुगी सुते सुते जुग बीते,
 नई जनम कृतार्थ कीते ।
 तू ते जैहर प्याले पीते,
 जेड़ा चित दुनियां बिच लाया ॥

भट सुतड़े नैन जगाई लै,

सत संगत पुन कमाई लै ।

किज खरचै जुगड़ा पाई लै,

लम्मा सफर सिरै पर आया ॥

लै हिरदा खुम्ब चढ़ाई,

कर अन्दर बार सफाई ।

ब्रह्मानन्द प्रभु मिल जाई,

पिछों कुत लेखै पछताया ॥

भजन ५२

माया दी जड़ियां खाई,

भलेआं बतोई गेआ ।

आया तूं रात कटन,

मालक गै होई गेआ ॥देका॥

ए देस डाकुर्यें दा,

दिन रात ठगगी चोरी ।

दिखी नमां मुसाफर,

लैन्दे गला मरोड़ी ।

तुम्मी जां अड्डै चढ़ेआ,

रोन्दा लटोई गेआ ॥

तेरे शा कईं सुआये,

आई रात इत्थें रेह ।

दिन निं चढ़ने पाया,

डेरे चकोई गे ।

मूरख मड़ा तुमी हुन कैस,

पर पसोई पेआ ॥

नक्कै गी पाई नकेलां,

नीन्दे गै तूं खचोना ।

चिकड़ै'च खुब्बी जागा,

उबड़े निं होन होना ।

कड़ियें कसोई मोहै दी,

टपलै दबोई गेआ ॥

चिन्ता दे नीरें भरियां,

नदियां बगी रेइयां नीं ।

द्वितीयः प्रश्नः

दिन रात दौड़ा लाई,
मुसाफरी पेइयां नीं ।
दिखना ब्रह्मानन्दा,
ते भी सनोई गेआ ॥

भजन ५३

अन्नां होआ विरें तू,
लवदा नीं लैन्दा चढ़दा ।
कुर्थे गये प्रेमी,
जिन्दा बसाह निं करदा ॥टेका॥
जिनें अहंकार भरियां,
लम्मियां परीतां लाइयां ।
ओ गे नीं रोन्दे धोन्दे,
पेहयां सिरें जुदाइयां ।
कालै बिगल बजाया,
कन्ना दा पगड़ी कढदा ॥
दुखें भरोचे जाल,
फान्दी लेई खड़ोता ।

जो आई फसे सराई,
 सत्रने गी दिन्दा धोखा ।
 भलेआं समेटी सोती,
 रैन्दा ई भोलां भरदा ॥
 मुलखें दे बाली जेड़े,
 सिरें छत्तर भुलाए ।
 उन्दे वी कड़ियै मुशकां,
 डेरे मसान लाए ।
 बनियै वे क्यासा,
 कान अपने हत्थें बड़दा ॥
 टोल्लें दे टोल भरियै,
 बैतरनी नेई सुटदा ।
 लेइयै वेही जेल्लै,
 चित्तर गुप्त पुछदा ।
 उस वेल्लै ब्रह्मानन्दा,
 अक्खीं दा नीर चलदा ॥

भजन ५४

तू राह मधानुआं की,
एडा सनोई गेआ ।

कन्नो दे साथियें शा,
बड़ी दूर होई गेआ ॥टेका॥

तेरे जनेह जेड़े,
लम्मी नीन्दरे सुत्ते ।

दिन चढ़ी गेआ,
उनें कनास नईं पुटे ।

उमरें दा रोना धोना,
बछोड़ा होई गेआ ॥

रस्ते च केईं जोआड़ां,
डंड कारां औनिआं ।

खूनी डाकुर्यें दियां,
धाड़ां बी पौनिआं ।

केईं बारी तू उन्दे शा,
इकला लटोई गेआ ॥

भव सिन्धु तरने दा,

एल्लै निश्चा जमाई लै ।

चौरासी चक्करै शा,

पीछा छुड़ाई लै ।

ब्रह्मानन्दा मुक्ति मिलग,

जेल्लै ज्ञान होई गेआ ॥

भजन ५५

उस बेल्लै जानी लैयां,

तूं पार होई गेआ ।

सत संगती दा फल,

तुगी जेल्लै थोई गेआ ॥टेका॥

रोगें भरी पुशाक,

देहै गी जानी लैगा ।

आपूं गी एदे कच्छा,

बखरा पछानी लैगा ।

हंकार बी अन्दरा दा,

सारा धनोई गेआ ॥

पापें ते पुन्नै रलियै,

दौने गलाखे पुट्टे ।

जगी ज्ञान जोआला,

उबड़े लोआरे उठ्ठे ।

करमें दा कूड़ा करकट,

भलेआं फकोई गेआ ॥

चंचल चित्तै दी चाल्लै,

रोन्दे ग रस्ते पंगड़े ।

मोह मलीदा होइयै,

उन्दे शा नठ्ठा अगड़े ।

सबरै दी लोभ जेल्लै,

उखली छड़ोई गेआ ॥

अपनी मिसल आपूँ,

मूँहैं अगगें टकाई ।

त्रैलोकी फारगती,

जेल्लै पढ़ी सुनाई ।

माया अपील दावा,

खारज होई गेआ ॥

करमें शा होई खलासी,

पुछदा निं कोई जगाती ।

असली रमज पछाती,

बेरी ना रेहा साथी ।

ए जग ब्रह्मानन्दा,

अन्दरा सतोई गेआ ॥

भजन ५६

ए जगत तमाशा ई,

सिनमे दी फिलम सारी ।

एदे'च रचेया पचेया,

दिता प्रभु बसारी ॥टेका॥

कुदै अचल समुन्दर,

नदियां ते खूनी नाले ।

कुतै डरौने पर्वत,

गासै ने छोने बाले ।

कुतै ते सुक्की सानी,

पृथ्वी रड़ी बचारी ॥

कुतै बागें'च सोबन,

रंगीलियां गुलजारां ।

सुरीले नाच करदे,

तोते लाई कतारां ।

गान्दी मलहारां बुलबुल,

खुशियें च पर सोआरी ॥

कुतै ते तीरथें पर,

साधु तपस्यां करदे ।

परमातमा पर डोरी,

भुक्खां कड़ाके जरदे ।

कुतै ते खूनी डाकू,

लैन्दे नीं धाड़े मारी ॥

गलें'च बाहीं फिरदियां,

जोआन मत्तियां ।

मांगां सिरें भराइयां,

जोबने'च रत्तिआं ।

कुतै दाड़ दाड़ पिट्टन,

मःथे पर हत्थ मारी ॥

कुतै राजें तखत वेही,

सिरें छत्तर मुलाए ।

जिन्दू' दी बाजी सूरमें,

रने च जाई लड़ाये ।

कुतै ते दाना दाना,

मंगदे फिरन भखारी ॥

पर जेल्लै सविच बिजली,

मनीजरै दबाया ।

चिट्ठी चादर रेही गई,

नजरी निं किज बी आया ।

इयां ब्रह्मानन्दा,

माया दी चित्तर कारी ॥

भजन ५७

जय जय दुर्गे महारानी,

जय शक्ति आद भवानी ॥टेका॥

बनी पार ब्रह्म दी माया,

तुद सारा जगत रचाया ।

तूं गौरां रूप बढाया,

शिव तांडव नाच नचानी ॥

तूं कलकत्ते बिच काली,

नित पूजन गौड़ बंगाली ।

अते वैष्णों पहाड़ें वाली,

कशमीरा क्षीर भवानी ॥

जेल्लै बैठी सिंह सुवारी,

दिते चंड ते मुंड वी मारी ।

आई शुम्भ निशुम्भ दी बारी,

तां पशुपती दूत बनानी ॥

तेरा रूप बिचित्र दिखी,

गंगा बी पेई गेई छित्थी ।

शिवें शरण जटें पर दित्ती,

तां पौन्दें होई गेई पानी ॥

जो पाना पाखी आये,

उनें मूंह मंगे बर पाये ।

उन्दे जम दे त्रास मटायें,

भव गागर पार लंगानी ॥

तू आदी जगत बधाता,

ते वेदें दी बी माता ।

तेरा अन्त कुसै नई जांता,

घट घट दी अन्तरयामी ॥

इस दुनियां बिच भरमाया

दिखी सारा साथ पराया ।

ब्रह्मानन्द बी शर्णी आया,

हे माता लाज बचानी ॥

भजन ५८

जय कृष्ण जय घनी शामा,

मिगी अपना दास बनाना ॥टेका॥

तुगी इक दिन उंगली लग्गी,

द्रौपदा लीर सहाड़ी दी बद्धी ।

जदुं होन लगी वे लज्जी,

ओदा पिछला करज मुकाना ॥

तू गुजरी भेख बनाया,

चन्दरावली दै घर आया ।

दिखी उस दा प्रेम सोआया,

छे महीने रात बनाना ॥

जदुं इन्द्र कुपित होई उठेया,

सारे अम्बरै दा जल सुटेया ।

चीची उंगली गोवर्धन चुकेआ,

ते बृज दी लाज बचाना ॥

कुरुक्षेत्र सैना छाई,
ले धनुखें वान चढ़ाई ।

बनी अर्जुन दा रथ-बाही,
उसी गीता ज्ञान सुनाना ॥

राने रखेआ नाग पटारी,
मीरां खोलियै भांकी मारी ।

बनी बांका छैल विहारी,
उसी अपना दरस दखाना ॥

आये नरसी घर बपारी,
उनें सौंपी पूंजी सारी ।

ओदी द्वारका हुगडी तारी,
भगतें दे भाव बधाना ॥

जिस जिस चित्त चरने लाया,
उस मन बांछत फल पाया ।

ब्रह्मानन्द बी शर्णी आया,
हृत्थ जोड़ी अरज सुनाना ॥

भजन ५६

जय राम राम रघुराई,
 तुस भगतें दे सुख दाई ॥टेका॥
 तेरी सुन्दर छबी न्यारी,
 दिखी लगदी अती प्यारी ।
 तां कीती शर्ण त्यारी,
 मिगी रखेआं चरणें लाई ॥
 तू' जनक पुरी बिच आया,
 शिवजी दा धनख चढ़ाया ।
 त्रै टोटे करी टकाया,
 सीतां जग माता बियाही ॥
 आई राज तिलक दी बारी,
 गेई केकेई भक्त मारी ।
 करी बनबासै दी त्यारी,
 पिता आज्ञा तोड़ नभाई ॥

उत्थें बिन्द नईं वनराये,

छड़े जंगल पर्वत गाहे ।

अते कंडे परै चुभाये,

ले चौदां वरस बिताई ॥

समुन्द्रै पर पुल पाया,

सैना दल पार पुजाया ।

जाई लैंका भंडा लाया,

करी रावनै उप्पर चढ़ाई ॥

उसी मारी अयुध्या आये,

सब लोकें मंगल गाये ।

शुभ साज समाज सजाये,

वैठे राज संधासन जाई ॥

मुनी पतनी अहल्या तारी,

नईं भुल्लेयां मेरी बारी ।

ब्रह्मानन्दै अरज गुजारी,

नित चरणें रखेआं लाई ॥

भजन ६०

तू ते उडन पखेरू आया,
तेरा सारा साथ पराया ॥टेका॥

चरजें भरी बिचित्तर रचना,
दिखी तू ललचाया ।

कई वारी खाई धक्के नठ्ठां,
बिन्द नई शर्माया ॥

अन्दर रग रग गन्द भरोचा,
बाहरें रंग चढ़ाया ।

ठीकरियां होई इक दिन,
भजना इस मिट्टी दी काया ॥

जग ममता दी तांग तरोड़ी,
ईशर चित्त नई लाया ।

आई ठगें दे काबू चढ़ेआ,
धन परलोक लुटाया ॥

मैं मेरी दे चढ़ी लोआरें,
तृष्णा नीर बगाया ।

सिरें पराड़ें पुज्जी झूंगी,
डबरी नेई डुबाया ॥

पैरे खुरे दा थौ दुराडा,
नईं मारग हत्थ आया ।

अवागौन ने चक्कर चाढ़ी,
फर फर तुगी रोआया ॥

परम पिता दा बनी प्रेमी,
जे गुर शरनी आया ।

तां समझी लै ब्रह्मानन्दा,
वेड़ा पार कराया ॥

भजन ६१

तेरी बात्ता-लो निं लबनी,
जेल्लै कालै कूच बजाया ।

तू ते तलियां मलदे जाना,
जियां पिच्छों रोन्दा आया ॥टेका॥

नौ महीने तुई गरभै अन्दर,
 पुठ्ठा करि लड़काया ।
 जेल्लै बा दुनियां दी लग्गी,
 माया बिच भरमाया ॥
 लगा होन जां बिन्द बिन्द उबड़ा,
 खेडें जी परचाया ।
 दिन दिन आकड़ बढ़दी गोई,
 पिछला कौल भुलाया ॥
 नशा जोआनी दा आई चढ़ेआ,
 भोगें घेरै आया ।
 चौरै पैहर नईं खैड़ा छुड़कै,
 जंजीरें जकड़ाया ॥
 रोगें भरेया आया बढ़ापा,
 खां खां करने लाया ।
 नेड़ै पेई दी चीज निं सुभदी,
 दिनें नराहता छाया ॥

दुन्दे, कन्नें, अक्खीं, सारें,

पिछला साथ छुड़ाया ।

ए किज होन लगा पर बदेया:

दिन दिन लोभ सोआया ॥

खेतरे बिच डरौने बांगूं,

डिग डिग कम्बदी काया ।

जिगरी टव्वर कवीला सारे,

दिखदे जियां पराया ॥

अजें वी समझी जेकर नईं तूं,

हरि चरणें चित्त लाया ।

तां जानी लै ब्रह्मानन्दा,

हीरा जनम गोआया ॥

भजन ६२

ए दिन चानन चार ते,

ओड़क न्हेरा ई ।

चिड़ियें कीता चूं चूं,
होआ सवेरा ई ॥

अखख ते पुट्टी दिखख,
चढ़ी दिन आया ई ।

पैछी फंग फरोलन,
फर फर लाया ई ॥

बुल बुल बिच गुलजारें,
चिड़ चिड़ करदी ऐ ।

मस्त मलहारां गाई,
दिलें गी हरदी ऐ ॥

तोते लाई कतारां,
खुशियें नचदे न ।

प्रेम भरोचे तान,
रंगीले दसदे न ॥

कायें कां कां करियै,
आल्लड़े सुट्टे न ।

=====

आपो आपने फंग,

सोआरी उठ्ठे न ॥

भौर फुल्लें पर बेहीयै,

गूं गूं करदे न ।

बास भरोची कलियें,

दै बिच बड़दे न ॥

कोयल बी अम्बें पर,

पर फरकान्दी ऐ ।

राह चलदें गी मिठ्ठे,

बैन सुनान्दी ऐ ॥

चौखरें अपने खुंड,

गलाखे छोड़े न ।

जूहें पासै चरने गी,

मूंहं मोड़े न ॥

पशुयें शा बी तूं,

नफिट्ट होई सुत्ता एं ।

=====

होई कलवार गेई,

नईं सेई सेई हुट्टा एं ॥

राह मधानुं अपने,

खरचे चुकदे न ।

कुक्कड़ बांगा शा बी,

पैहलें उठदे न ॥

कल्ल मुकल्ले,

दूरदुराडे जाना ई ।

कीआं एडा पैडा,

तोड़ नभाना ई ॥

सुत्तें उमर गोआई,

होआ कुवेला ई ।

मुठ्ठीं बट्टी दौड़,

अजें बी वेल्ता ई ॥

भजन प्रभु दा इक रस,

होइयै करदा जा ।

किठ्ठे होन जखीरे,

भोल्लां भरदा जा ॥

सुखें भरोची सर्व,

शान्ति पाई लै ।

समराटी गी लेइयै,

चौर भुलाई लै ॥

अवागौन दे अगले,

पन्ध मटाई जा ।

ब्रह्मानन्दा समता,

बिच समाई जा ॥

भजन ६३

ऐ जोवन दिन चार,

की आकड़ी चलना एं ।

मिट्टी दा कलबूत,

मिट्टी बिच रलना एं ॥

जिस गी अतर फलेल,

सुगन्धी मलना एं ।

चड़ी चिखा पर इक दिन,

भांवड़ बलना एं ॥

इक बी भूत लग्गा दा,

टन्बर नचान्दा ऐ ।

जिस गी व्यापे पंज,

कीआं सुख पान्दा ऐ ॥

इन्दी गै ए नगरी,

काया आखी ऐ ।

हिरदे गुफा दै अन्दर,

आतम साखी ऐ ॥

इस गी तुपदे कन्दरें,

आसन लान्दे न ।

भेत गुरें शा लेइयै,

दर्शन पान्दे न ।

इयै परम पती सबदा,

परमेशर ऐ ।

ब्रह्मा, विष्णु राम, कृष्ण,

महेश्वर ऐ ॥

इयै सर्व चराचर दा,

घट बासी ऐ ।

इस्सै दा नां वेदें,

मुक्ति आखी ऐ ॥

भागें भरेया जो ए,

दर्शन पान्दा ऐ ।

तां भूतें शा अपनी,

जान छुड़ान्दा ऐ ॥

जेल्लै ज्ञान अगगी दे,

लोरे उठदे न ।

जनम जनम दे करम,

उन्दे विच फुकदे न ॥

इक छड़ी प्रारब्ध गै,

बाकी रौन्दी ऐ ।

ज्ञान होये पिच्छें जो,
 भोगने पौन्दी ऐ ॥
 देह पात होए मुक्तें ने,
 जाई रलदा ऐ ।
 ब्रह्मानन्दा अटल,
 संधासन मलदा ऐ ॥

भजन ६४

पूरण भाग करियै आया,
 सर्वांगी लेई काया ॥देका॥
 गोरख धन्दे दै बिच फसेआ,
 करना किज ते करी किज दसेआ ।
 जितना रोयेआ उन्नां नईं हस्सेआ,
 काल सिरै पर छाया ॥
 कौडी नईं एदी कदर पाई,
 खेऊ कन्ने इसी दित्ता रलाई ।
 बिषे दी लालसा उमर गोआई,
 भजनै चित्त नईं लाया ॥

भोगें गी दिख्खी हलचली पेई,

रैन्दी सन्दी बी अकल गेई ।

इन्द्रियें दी टोली लेई,

अगुआ मन बनाया ॥

बीती रात सल बछौना,

किचरक अख्खीं मलदे रौना ।

ओड़क इत्थों उठने पौना,

नेडै सफर आया ॥

ब्रह्मानन्दा चिर नईं लायां,

हरि दे चरणें जाई समायां ।

पिच्छों दा नईं पच्छो तायां,

हीरा जनम पाया ॥

भजन ६५

जय ओंकार जय ओंकार,

वेदें दा बी सार ऐ ॥टेका॥

जो जो तेरा ध्यान धरन,

छुड़की जन्दा जनम मरन ।

ब्रह्मा, विष्णु, गान करन,

मैहमा अपरम पार ऐ ॥

नदियां, पहाड़, ते समुन्द्र,

पृथ्वी गास सूरज, चन्द्र ।

मैहल, माड़ियां ते मन्दर,

सबने दा आधार ऐ ॥

पशु, पखेरूं, कीट, पतंग,

गन्धर्व, किन्नर, देव, दनुज ।

जलनिवासी बी ते मनुज,

तेरा गै परिवार ऐ ॥

सत्त लोक नौ खण्ड,

चौदां भुवन ते ब्रह्माण्ड ।

सबने दै रेही अंग संग,

लाया दरबार ऐ ॥

फुल्लें दै बिच जियां सुगन्ध,
सौ सौ गुना आनन्द ।

ब्रह्मानन्द बार, बार
बार नमसकार ऐ ॥

भजन ६६

हे दीने दे नाथ कृष्ण,
तेरी शरनी आई ॥टेका॥

जेड़े तुगी समर्ण करन,
निश्चै उन्दे पाप हरन ।

अन्त गी भव सिन्धु तरन,
बेड़े पार लाई ॥

ममता दै बिच आई फसी,
सुखने जितनी बी निं हसी ।

जालो खालें उमर कटी,
विपता पेई सोआई ॥

होशा बेल्लै लीके कोले,
पुन्न फरोली खड्डें डोले ॥

सोआस मोती कखें रोले,
तेरी याद भुलाई ॥

दुखें सूलें कीता एका,
दिन दूना पेया भलेखा ।

न सौहरा ना भलदा प्योका,
रोई तेरै दर आई ॥

ब्रह्मानन्दा जित्थें फिरकां,
उतै पासै भिड़कां थिड़कां ।

थां निं लभदा कुत्थें खिसकां,
चरणें रखेआं लाई ॥

भजन ६७

तूं अपना आप भुल्लियै,
देहै गी दिखना ।

इसै गी असली अपना,
स्वरूप मित्थना ॥

सारा ध्यान तेरा,

इसै ने खिचेआ ।

ए नाम रूप जगत,

सारा ई मिथेआ ॥

दिखने गी ए जियां,

लभदा ई चुलबुला ।

इयां गै पानियेँ च,

जियां ई बुलबुला ॥

जुगें जुगें दा बुद्धि,

पर जंगाल चढ़ेआ ।

आपूँ गी तां गै मिथना,

कंगाल अड़ेआ ॥

तूँ हीरे मोतियें दा,

आपूँ जोआहरी एं ।

आपूँ गी भुल्ली आपूँ गै,

मिथना भखारी एं ॥

तेरी गै सारता कन्ने,

ए जगत रचेआ ।

सत्त लोक चौदां भुवन,

नौ खण्ड बसेआ ॥

तेरे डरै ने सूरज,

चन्न बायु चलदा ।

तेरे हुकम बिना निं,

इक पत्र हलदा ॥

दुखें दा लेश बी नईं,

सुखें दी राशी एं ।

सत, चित्त रूप आनन्द,

घट घट निवासी एं ॥

सबने जीव जन्तुयें दी,

उत्तम गती एं ।

ब्रह्मानन्द आपूँ गै,

माया दा पती एं ॥

ए मन छल छिहरें नईं टलदा,
 इसै जगत रचाया ई ।
 तेरी जे किज नजरी चढ़दा,
 ए सब भूठी माया ई ॥टेका॥
 जेड़े बाग बगीचे सोहने,
 अते सोहने दे मूंह मोहने ।
 ओड़क इक दिन मट्टी होने,
 ए सुखने दी छाया ई ॥
 जियां सिप्पी दे बिच चान्दी,
 ते रस्सी सप्प बनान्दी ।
 राह चलदें गी टपलान्दी,
 माया खेड रचाया ई ॥
 इत्थें पलभलदा ई बासा,
 जियां पानी बिच पतासा ।
 बांगूं नाटक लगा तमाशा,
 दिखखी जग भरमाया ई ॥

कुतै लभदियां खिड़ खिड़ खुशियां,
 नारीं गान बिहाइयां उठियां ।
 ते कुतै गलें च जुलफां सुट्टियां,
 दड़ दड़ पिट्टन पाया ई ॥
 जेड़े कुटम्ब कबीले नाते,
 सब इक इक करि पछाते ।
 ब्रह्मानन्दै भलेयां जाचे,
 ए सब साथ पराया ई ॥

भजन ६६

जे तुद हरि निं सिमरन कीता,
 पिच्छों पच्छो ताना ईं ।
 जेड़े कौल करि आया एं,
 उनेंगी तोड़ नभाना ईं ॥टेका॥
 तेरी तृम्बें घड़ियै काया,
 प्रभु ने पिञ्जरा छैल बनाया ।

बनियै पैछी बिच समाया,

भौरै उडरी जाना ईं ॥

इत्थें तिलकन बाजी वेहड़ा,

कैस पर करना मेरा मेरा ।

ओड़क पुटने पौना ईं डेरा,

ए ते मुसाफर खाना ईं ॥

तुगी मिलना मूल निं बसना,

पौना पैर पोआने नसना ।

अगों रस्ता कुसै निं दसना,

दूर दुराडे जाना ईं ॥

रखी लम्मियां चैड़ियां आसां,

तूं ते अध मभाटै फासां ।

लान्ना कण्डे तुपना दाखां,

मेवा कुस खलाना ईं ॥

हुन ते छोड़ जगत दा धन्दा,

तौले उठ ब्रह्मानन्दा ।

लेई लै हत्थ समराटी भंडा,
जे मुक्ति गी पाना ई ॥

भजन ७०

तेरी पंजें ततें दी काया,
उडन खटोला आया ई ।

अन्दर प्रभु ने आसन लाई,
वाह वाह साज सजाया ई ॥टेका॥

डाढे कारिगिरै दियां अकलां,
जेदी लखी निं जन्दी लखना ।

बख बख रंग बरंगियां शकलां,
दिखखी जी ललचाया ई ॥

पञ्च प्राण एदे बिच चलदे,
सारे काज देहै दे करदे ।

पर नईं इक दूये ने रलदे,
कुसै ने भेत निं पाया ई ॥

लग्गे जोड़ नईं पनछोन्दे,

बाह्मों कबजें उप्पर चकोन्दे ।

मारो खिचिचयां नईं तरटोन्दे,

भला मसाला लाया ई ॥

मासै कन्ने नाड़ीं जक्कियां,

जियां आखो रस्सियां बट्टियां ।

बिन धागें त्रोंपें कस्सियां,

अन्दरें रगत बगाया ई ॥

भठ्ठी जठरा अगन तपान्दी,

खादा पीता भसम बनान्दी ।

रत्ती देहै गी आंच निं लान्दी,

पक्का नियम चलाया ई ॥

कारिगिर इस गी रचियै,

हिरदे गुफा च आसन रखियै ।

आपूं बैठा अन्दर छपियै,

कुसै गी नजर निं आया ई ॥

ब्रह्मानन्द जो इसगी जानै,
 जाई गुरें शा कुंजी आनै ।
 तां भलेयां करि पछानै,
 परलै पार पुजाया ई ॥

भजन ७१

जय बृज राज गोपाल,
 जगत सब तेरी माया ई ।
 जिस तुद चरणें चित्त लाया,
 मुंह मंगेआ बर पाया ई ॥टेका॥
 जदूं तूं गर्भें बिच आया,
 तां कैसै ने कहर कमाया ।
 मारी जन्द्रे पैहरा लाया,
 उस बन्दी बिच पाया ई ॥
 जेल्लै लेई तुस जनम पधारे,
 पैहरेदार बी सेई गो सारे ।

तां बसुदेवें भित्त गोहाड़े,

बिच टोकरी पाया ई ॥

लगे लंघन जां उबड़ी करियै,

देई छलाका जमना चढ़ियै ।

कीते दर्शन लोचन भरियै,

चरणें सीस नोआया ई ॥

चली गढ़ पर्वत दा आये,

जाई दरवाजै नाद बजाये ।

जसोदा मोतियें थाल सजाये,

शिवें गी दरस दिखाया ई ॥

जेल्लै अट्टे बरें दे होये,

सारे वृजवासी आई रोये ।

चुकी गोवर्धन उठी खड़ोये,

इन्द्र बी शरनी आया ई ॥

जदूं द्रोपदी रोई पुकारी,

ओदी सभा'च लाज सोआरी ॥

ते नरसी दी हुण्डी तारी,

भगती भाव बधाया ई ॥

कौरों पाण्डों जुद्ध रचाया,

तां सैनादल लड़ने आया ।

अर्जन गी ज्ञान सखाया,

ब्रह्मानन्द सुनाया ई ॥

भजन ७२

तुद जुग जुग धक्के खादे,

पर बिन्द अकल निं आई ऐ ।

अजें बी तृष्णा चढ़ि लोआरें,

मेरी मेरी लाई ऐ ॥टेका॥

सदा रेहा इसै बिच फसेआ,

मुड़ी उजड़ी उजड़ी बस्सेआ ।

हथें अपनं रस्सा बट्टेआ,

गलै च फांसी पाई ऐ ॥

तू जनम जनम रेहा खन्दा,

परलोक बी कीता गन्दा ।

नईं सम्भलेआ मन मश्टण्डा,

दूनी ममता पाई ऐ ॥

जेड़े दिखना चरदे चौने,

सब रेतु दे नीं खडौने ।

पेई फुंग तां रुलकी पौने,

माया खेड रचाई ऐ ॥

ए निकल मुलम्मा चान्दी,

रेही नित्त भलेखें पान्दी ।

साधें गी चोर बनान्दी,

इस्सै धुम्म मचाई ऐ ॥

तू जद जद इत्थें औना,

मैं मैं दै घेरै रौना ।

मुड़ी उस्सै खूहै बिच पौना,

अजें बी सुरत निं आई ऐ ॥

हुन ते उठ ब्रह्मानन्दा,

जड़ा पुट्टी सुट्ट इस दा भंडा ।

परलोक निं करेयां गन्दा,

कालै बीन बजाई ऐ ॥

भजन ७३

ओ ते सूर बीर मरदाने.

जेड़े मन समझान्दे नीं ।

भव सागर दै बिच डुबदे,

बेड़े पार लंघान्दे नीं ॥टेका॥

जेकर होयै निं तित्तर बित्तर,

तां सौ मित्तरें दा बी मित्तर ।

करियै इस गी परम पबित्तर,

हिरदें जोत जगान्दे नीं ॥

जिनें इसदी सार पछाती,

उयै भजन करन दिन राती ।

नित रैहन एकान्त वासी,
गूढ़ा रंग चढ़ान्दे नी ॥

जेड़े भाखखड़ भांजे भलदे,
ते दिन दिन उबड़े चढ़दे ।

उयै इस दियां मुशकां कढ़दे,
ते हरि चरनें लान्दे नी ॥

जिनें भोगें चित्त भरमाये,
ओ तलियां मलि पछताये ।

जाई नरकें डेरे लाये,
हाहा कार मचान्दे नी ॥

कर भटपट ब्रह्मानन्दा,
दिखेआं मत हुन धोखा खन्दा ।

तौले कट्ट चौरासी फन्दा,
चारै वेद सुनान्दे नी ॥

भजन ७४

जिसने अपना आप पछातां,
ओ ते भागें भरेआ ई ।

हसदें सिर सिर बाजी लान्दा,

नईं मौती शा डरेआ ई ॥टेका॥

त्रट्टी परें जगत दे धन्दे,

टपदा औखे घाटे दन्दे ।

उस गी चिर नईं लगदा जन्दे,

दिन दिन पैड़ी चढ़ेआ ई ॥

कपटी दुनियां दिला भुलाई,

अकखीं मीटी ताड़ी लाई ।

अन्दरा खान सुखें दी पाई,

ते भव सागर तरेआ ई ॥

मरना जीना इक जनेआ,

जो उस लैना सा लेई लेआ ।

परती मुड़ी निं टपलें पेआ,

उस शा काल वी डरेआ ई ॥

होई चारै चक्क सफाई,

उस दी छुड़की आस पराई ।

अगों अपनी मिसल टकाई,

आपूँ फैसला पढ़ेआ ई ॥

चढ़ेआ देई ज्ञान लोआरे,

ओदे पितर बी पार तोआरे ।

ब्रह्मानन्दा जनम सोआरे,

सारा कुल बी तरेआ ई ॥

भजन ७५

तूँ ते आकड़ी आकड़ी चलना,

मौत बछौना पान्दी ऐ ।

तेरी सातमदारी होनी,

ए ते खुशी मनान्दी ऐ ॥टेका॥

जिसगी फिरकी फिरकी दिखना,

इस देह ने मूल निं टिकना ।

जेल्लै आई जमदूतें खिचना,

तां इक पल निं लान्दी ऐ ॥

तूं जीने दे साज बनाये,
 ते इस मौती किड़े सजाये ।
 आई सिरै पर सैख बजाये,
 भट पट चिखा चढ़ान्दी ऐ ॥
 मता मूल निं चाम्बलै चढ़ेयां,
 ते मुगता नईं खिड़ खिड़ करेयां ।
 सप्पै बांगुं इस थीं डरेयां,
 ए फनकारे लान्दी ऐ ॥
 भलेयां सुनेआं ब्रह्मानन्दा,
 दिखें कचचा गिउजा दा जन्दा ।
 तौले त्रोड़ेआं इस दा फन्दा,
 गीता ज्ञान सुनान्दी ऐ ॥

भजन ७६

तूं ते सुखखनें सरीनियें आया,
 दस केह काज बनाया ई ।
 हुन तुद लम्मी मुसाफरी पौना,
 इकले जाना आया ई ॥टेका॥

तू सदा रेहा अलगरजी,

अते बरती अपनी सरजी ।

हुन मौत आई सिर गरजी,

अगों देस पराया ई ॥

इत्थों पुट्टने पे नी डेरे,

दस होडन कियां नवेड़े ।

तुद आपू दुखड़े सेहड़े,

ए मन नईं समझाया ई ॥

आपू रीस कुचञ्जी कीती,

दिनो दिन बधाई हीखी ।

नौमें भगड़े पे बधीकी,

लेखा देने आया ई ॥

तेरा साथ गेआ ई दुराडें,

तू अक्खीं पुट्टे ना जागें ।

इत्थें किचरक सौगा बागें,

काल सिरै पर छाया ई ॥

तू ठगों दी बसदी बसना,
आक्खें किज ते किज करी दसना ।

तां गै जन्ना एं सख-मसखना,
माया ने भरमाया ई ॥

ब्रह्मानन्द पेई गल फांसी,
औखा छुड़कन फेर चुरासी ।

चौन्नें वेदें ए गल्ल आखी,
जां तक भेत निं आया ई ॥

भजन ७७

तेरियां नित नित वे परवाइयां,
वनियां दिन दिन फाईयां नी ।

हसि हसि कीते करम कवल्ले,
हुन की रीनियां लाइयां नी ॥टेका॥

जिनें पंडां सिरै पर चुकियां,
उने दड़ दड़ छातियां कुटियां ।

जमें खल्लां लोआइयां पुठियां,

कीतियां कैहर कमाइयां नी ॥

जेड़े खुशियें पाप चमेड़े,

उनें पाये चबख्खीं घेरे ।

होये आँखे होन नवेड़े,

आपूँ कीतियां पाइयां नी ॥

उनें बह्नी बतरनी सुट्टना,

उत्थें चित्तर गुप्तै बी पुच्छना ।

इक छुड़ना दूये कुट्टना,

ढाढियां देन सजाइयां नी ॥

जिस हरि चरनें चित्त लाये,

उस पुन्न भण्डार भराये ।

पक्के हिरदें रंग चढ़ाये,

सुरगें पींगां पाइयां नीं ॥

इस दिलै दियां बागां मोड़ें,

सच्छे प्रभु कन्ने नाता जोड़ें ।

ब्रह्मानन्दा ए जग छोड़ें,

तां तुद तोड़ नभाइयां नी ॥

भजन ७८

सच्चि धुर दरगाह दा लिखेआ,

हुन पर्वाना आया ई ।

तूं ते सदा भलेखें रौन्ना,

ए के कसब बनाया ई ॥टेका॥

जो लिखेआ उसी कुन परतै,

उयै होनी बनियै वरतै ।

जियां बाज चिड़ि पर भपटै,

दिखली जी थथराया ई ॥

तुद आपूं होश निं कीती,

दिन दिन बनेयां रेयां कनीती ।

जेल्लै आई सिरै पर बीती,

हुन की नक्क चढ़ाया ई ॥

सत्र करनियां करियै किठियां,

मस्थै रेखां बधाता खिचियां ।

नईं मिटियां कुसै दियां दिखियां,

लेखा देना आया ई ॥

जेड़े धन्दे परें तटदे,

उयै जम फांसी गी कटदे ।

जीन्दें मौत तली पर रखदे,

हरि चरनें चित्त लाया ई ॥

तूं सुनी लै ब्रह्मानन्दा,

रवेयां सिद्धै रस्तै जन्दा ।

जेकर मुड़ी निं धोखा खन्दा,

तां परलोक बनाया ई ॥

दोढ़े

करना करम कुचज्जे जेल्लै,

अन्धा धुन्द मचाना एं ।

तां पिछड़ा तूं मूल निं दिखदा,

अगड़ी हिरस बधाना एं ।

अठ्ठ पैहर फिरें मस्ती बिच,
जीन्दा नक्क बढ़ाना एं ।

ब्रह्मानन्दा तोमत तानें,
ईश्वर दै सिर लाना एं ॥१॥

खरी खुट्टी दी परख निं करदा,
आकड़ी आकड़ी चलना एं ।

ए कलबूत मिट्टी दा घड़ेआ,
ओड़क मिट्टी रलना एं ॥

जिस गी आंच निं लगगन दिन्दा,
जाई चिखा पर चढ़ना एं ।

ब्रह्मानन्दा पेश निं जानी,
बड़ बड़ भांवड़ बलना एं ॥२॥

गाल मोआलीं जीह्व गम्माई,
हर दा नाम निं जपेआ ई ।

इस कालै ने चटनी करियै,
जो आया सो चटेआ ई ॥

हीरा जनम गोआया ह्त्था,

तुद आई के खटेआ ई ।

ब्रह्मानन्दा जस फांसी दा,

आपूँ रस्सा बटेआ ई ॥३॥

घर घराट नईं तेरा इत्थें,

ना कोई सच्चा साथी ऐ ।

ना मता चिर टिकना मिलना,

जोगियें आली फराटी ऐ ॥

दिन चढ़दे तुद राही होना,

कोयल बासा राती ऐ ।

अजें बी समझ ब्रह्मानन्दा,

नईं तां फेर चौरासी ऐ ॥४॥

चुप्प करी नईं अन्दर भांकें,

बारें रौले पाना एं ।

अनमुल्ले सोआसें दे मोतीं,

खड्डें जाई रुढ़ाना एं ॥

त्रैलोकी दा चक्रा बरती,

दर दर भस्सड़ पाना एं ।

टाल मटोलें ब्रह्मानन्दा,

की हुन वक्त खुं भाना एं ॥५॥

छुरी चलायें दूयें दे गल,

आपूं बनना सुखिया एं ।

तां सिरा नईं रोना चुकदा,

सौ दुखियें दा दुखिया एं ॥

आपूं बनियें घर घोहाड़ू,

अपनी ब्रह्मी पुटिया एं ।

ब्रह्मानन्दा जाई गुरें मिल,

तां सुखियें दा सुखिया एं ॥६॥

जेड़े शरन गुरें दी जन्दे,

उनें गै रमज पछाती ऐ ।

सुखने बिच बी आंच निं लगदी,

ठण्डी सीतल छाती ऐ ॥

दिन दिन उबड़ी पैड़ी चढ़नी,
इयै औखी घाटी ऐ ।

ब्रह्मानन्दै अखखीं दिखखी,
भलेयां करि पछाती ऐ ॥७॥

भांकी अपना अन्दर दिखखें,
अमरत भड़ियां लान्दा ऐ ।

बरसांती दा बदल अखचै,
खूह तला भरान्दा ऐ ॥

जिस मूरख गी होयै नराहता,
नाड़ें छांवे लान्दा ऐ ।

ब्रह्मानन्दा जो इसी जानै,
खान सुखें दी पान्दा ऐ ॥८॥

तरना ईं तां तर भवसागर,
नदियें पेई की तरना एं ।

लड़ना ईं तां लड़ मनै ने,
फौजां लेई की लड़ना एं ॥

चढ़ना ईं चढ़ ज्ञान संधासन,
धारें पर की चढ़ना एं ।

ब्रह्मानन्दा नईं तां अध,
मभाटै डुव डुव करना एं ॥६॥

थर थर कम्मनी पौन्दी जेल्लै,
मौत आई सिर गजदी ऐ ।

भौर नमाना उडरी जन्दा,
देह चिखा पर चढ़दी ऐ ॥

लकड़ी तील्ले कखखें वांगूं,
हड्डी पसली बलदी ऐ ।

ब्रह्मानन्दा राजा राना,
सब दी आकड़ भजदी ऐ ॥१०॥

दर दर बजदे लाज निं औन्दी,
जुग जुग खाई समाहे नी ।

मुड़ि मुड़ि उयै खुण्ड गलाखे,
हासैं जी परचाये नी ॥

अन्दरा गिठ गिठ मैल निं धोती,

बाहरें सावन लाये नी ।

ब्रह्मानन्दा सुत्ते जागन,

मचले कुस जगाये नी ॥११॥

धुम धमाऊ जोआनी आई,

अन्धा धुन्दी पेई गेआ ।

जां बढेपे ने मुंह कडेआ,

गोडे पगड़ी वेही गेआ ॥

आई जसदूतै कड़ियां मुश्कां,

कन्न मरोड़ी लेई गेआ ।

पारस जनम ब्रह्मानन्दा,

कौड़ी बदलै खेई पेआ ॥१२॥

नफा नफा गै करदें बीती,

पर रोना नईं मिटेआ ई ।

दिन दिन चिकड़ै दै बिच खुब्बा,

सुखनै सुख निं दिखेआ ई ॥

दुरने वेल्लै टब्बर टोरै,
आई सिरै पर पिटेआ ई ।

ए किज दिख्खी ब्रह्मानन्दा,
अजें बी सबक निं सिखेआ ई ॥१३॥

परती परती मुड़ियै औना,
भी पिछड़ा परतोना एं ।

औन्दें होई बी ठिन ठिन लान्ना,
जन्दे छम छम रोना एं ॥

इत्थें बी जितना चिर रौना,
भिड्डा बांग तम्बोना एं ।

ब्रह्मानन्दा शर्म निं औन्दी,
भी उत्तै खूह पौना एं ॥१४॥

फादल पेई गेआ सबने थारें,
चिड़ चिड़ मूल निं छुड़दा ऐ ।

बाहरें नईं बोहासरी सकदा,
अन्दरें कुड़ कुड़ कुड़दा ऐ ॥

पाप पुन्नें दियां फलियां भड़ियां,

जम दा त्रास मटाय़ा ऐ ।

ब्रह्मानन्दा कईं जनमें शा,

भुल्ला दा घर आया ऐ ॥१७॥

ममता दे मैहलें बिच रेइयै,

जिगरी मैल निं घुलदी ऐ ।

बुद्धि होई मलीन चवख्खीं,

भोगें पर गै डुलदी ऐ ॥

बासना बीज लगी फलवाड़ी,

दिन दिन दूनी फुलदी ऐ ।

जीव भावना ब्रह्मानन्दा,

तां चौरासी रुलदी ऐ ॥१८॥

राहिया हुन ते सुरत सम्भालें,

पैडा कियां कटोना ईं ॥

एका दिन डुबने पर आया,

पल भल बिच धरोना ईं ॥

इस नगरी बिच डाकू बसदे,

सुत्ते रेही लटोना ईं ।

ब्रह्मानन्दा अजें बी जागें,

पिच्छों किज निं थोना ईं ॥१८॥

लाडें प्यारें बिच पेई,

तूं लीन होई गेआ ।

देहै गी अपना स्वरूप समझी,

दीन होई गेआ ॥

मोहै दे चक्करें चढ़ी,

मलीन होई गेआ ।

ब्रह्मानन्दा सबने पासें दा,

तूं हीन होई गेआ ॥१९॥

बसदी बंजर इक बरोबर,

चित्त इक टक खड़ोरै ।

दूई दा पड़दा अपने अन्दरा,

जड़ें समेत पटोयै ॥

ज्ञान ज्वाला देयै लोआरे,

कूड़ा करक फकोयै ।

तां जगत बिच ब्रह्मानन्दा,

मुड़ि मुड़ि आई निं रोयै ॥२०॥

वारा माह

चेत्तर चाल कुचजी चलेयां,

ए के तेरा चाला ई ।

कच्छै हेठ छुरी छपेआली,

बाहर गले बिच माला ई ॥

लट पट पैछी राम राम,

ओठें पर तोते वाला ई ।

अन्दर बैठा ब्रह्मानन्दा,

नाग दुसूंआं काला ई ॥

बसाख बसोआ कैस कस्मै दा,

जे मन बसनि पाया ई ।

वे इलमें गी लुट्टी खाना,

मन्त्र भला चलाया ई ॥

सौखा बड़ा कमाऊ पेशा,

रस्ता छैल बनाया ई ।

दौनी पासें ब्रह्मानन्दा,

काला मुंह कराया ई ॥

जेठ जोआनी कैहदी आई,

सन्न चढ़ी बरड़ाई गेआ ।

धन जोवन दे नाटक दिखवी,

आप-रशें पर आई गेआ ॥

उन्दे अन्दर रचेआ पचेआ,

दसैं लोक भुलाई गेआ ।

इन्नें बिच गै ब्रह्मानन्दा,

काल सिरै पर छाई गेआ ॥

हाड़ हवाई दुड़ाना घोड़े,

होई दिन दिन मस्ताना एं ।

अपनी मत्त ठकानै नईं,

दोस दूयें सिर लाना एं ॥

लोक परलोक नईं किज वी सुभदे,

दिन दिन पाप कमाना एं ।

ब्रह्मानन्दा आई सिर बरती,

हुन की पच्छो ताना एं ॥

सौन सरूटें दै बिच वेइयै,

तूं बागें गी तुपना एं ।

तोड़ नभाने बाले रस्ते,

तरने गी नईं पुछना एं ॥

अन्धा धुन्द मचाई दूयें गी,

दौने हत्थें लुटना एं ।

ब्रह्मानन्दा लेखे वेल्लै,

दड़ दड़ छाती कुटना एं ॥

भाद्रों भार चुके पापें दे,

दस हुन साथी केहड़ा ई ।

कल्ल मुकल्ले जाना इत्थों,

करना कुस नवेड़ा ई ॥

आपूँ पैर कोहाड़ी मारी,

सिर सिर पेआ बखेड़ा ई ।

ब्रह्मानन्दा छोड़ कुरस्ते,

अजें बी बक्त बतेहरा ई ॥

अस्सूँ आस हिरस नईं कड़ी,

दस गेआ तां के गेआ ।

नत्त वरत फाके बी कीते,

बस्स लेआ तां के लेआ ॥

जियां नंग मनुङ्गा आया,

सख मसखना देह गेआ ।

ब्रह्मानन्दा कौडी बदलै,

हीरा बी जाई खेह पेआ ॥

कत्तक काल सिरै पर दिखदा,

अखख निं भमकन पान्दा ऐ ।

जां अवधी होई पूरी चुकदी,

इक पल चिर निं लान्दा ऐ ॥

बरछियां भाल्ले तरकस चाढ़ी,

तीर कमान चलान्दा ऐ ।

ब्रह्मानन्दा मुश्कां कड़ियै,

जम दै लोक पुजान्दा ऐ ॥

मग्वर मास पराये खादे,

कीती सीख करारी ऐ ।

लून मसाले पिपलां लाई,

भलेआं करी सोआरी ऐ ॥

सोआद बनाई छैल चटपटे,

जीह्व चटाकें चाढ़ी ऐ ।

ब्रह्मानन्दा हुन की रोना,

अपनी बी ते बारी ऐ ॥

पोह पे निं लेखे भरने,

कुस हुन जान बचानी ऐं ।

पिञ्जनै वांगूं कुदके चलने,

गुग्गड़ फंडी जानी ऐं ॥

ऐशें बदलै डुसकी डुसकी,

हाल दुहाई मचानी ऐं ।

ब्रह्मानन्दा बरतन लगी,

हुन तुद सार पछानी ऐं ॥

माघ मना मनै बिच खुशियां,

सिर सिर बाजी लान्दा जा ।

सच्चो शरन गुरें दी लेइयै,

डोवू साथ रुढ़ांदा जा ।

पाप पुन्नै दियां छोड़ बासनां,

जीना सुफल बनान्दा जा ।

ब्रह्मानन्दा दिन दिन दूना,

अगड़ा कदम बधान्दा जा ॥

फगन फिकर फजीते चुक्के,

ममता मित्ती रली गेई ।

होनी हारी हुट्टी नस्सी,
सतगुर सेवा फली गई ॥

दूई दुराडी अन्दरा डरदी,
छालीं मारी चली गई ।

ब्रह्मानन्दा चुरासी चक्कर,
मनकें मालां गली गई ॥
कवित्त

कर चंगे कम्म,
किज लेखै लग्गै चम्म ।
जेत्तै निकली गेआ दम,
भी कुस सुनाना ईं ॥

टब्बर टोरै रम्हाना,
बिन्द रौला बी पाना ।

पर कुसै नईं छड़ानां,
नेईं चिखा चढ़ाना ईं ॥

तेरी करदूतें,
आई घेरना जमदूतें ।

रलियै इनें लूतें,

तुगी लाम्बा बी लाना ईं ॥

ब्रह्मानन्दा दिखव,

जेड़ी दसना ईं सिखव ।

इसी छाती पर लिख,

नईं तां पछताना ईं ॥१॥

खरी बत्ता चलेयां,

उसी परखी लै भलेयां ।

मुड़ी उत्थें गै नईं गलेयां,

जित्थों पिट्टन पाया ई ।

तुद आई के लेआ,

नित्त रोन्दा गै रेहा ।

ए साथ ई कवेहा,

तुई रस्तेआ खुंजाया ई ॥

तू जक्कड़ें खुश रौन्ना,

जाई मक्कड़ें च बौन्ना ।

तां उन्दे मुंह पौत्रा,

इस खेऊ'च रलाया ई ॥

हुन दस ब्रह्मानन्दा,

कुन माड़ा ई ते चंगा ।

जे भिरी लैगा पंगा,

तां के सुख पाया ई ॥२॥

तू आया मसां घाली,

पर गिफ्ता कचची चाली ।

मती ए गल्ल गाली,

जेड़ा मस्ती च पेई आ ।

हैसां सूरमा सुजाखा,

तुद आपूं सब किज भाखा ।

पर बिछड़ी गेआं साथा,

तां पिच्छें रेई आ ॥

तू शेरें दा बी शेर,

ते उन्दे शा बी दलेर ।

लाये भिड़ुं ने भेड़,

तां जौर चेई आ ।

ब्रह्मानन्दा होश आनें,

ते आपूं गी पछाने ।

ओल्लै तूं जानें,

सारा किज लेई आ ॥३॥

तूं गंगा जल छुड़ना,

ते पुठ्ठे पैरें दुरना ।

तां खड्डे च रुढ़ना,

पिच्छों पछताना ए ।

तूं लाल्लें दा बी लाल,

पाई वैठां जंजाल ।

तां गेआं होई कंगाल,

कौडी कौडी गी रम्हाना ए ॥

तूं जदूं इत्थें आया,

गल इयै रोना पाया ।

सदा रड़ै सिर मनाया,
 भी बार पुछाना एं ।
 ब्रह्मानन्दा उट्ट,
 अकखीं अगों पड़दा पुट्ट ।
 आपूं होई बौगा चुप्प,
 जेड़ा हुन रौला पाना एं ॥४॥
 तूं लाडें पालेआ,
 ते लोरियें सोआलेआ ।
 तूं आपूं सिर जालेआ,
 जाई पुजां घसड़ोना एं ।
 तूं चिकड़ै च खुब्बा,
 ते डवरीं बी डुब्बा ।
 तुगी भिरी नईं सुभा,
 सगों मुगता पछोन्ना एं ॥
 जिनें खादे धक्के,
 उन्दे छुटी गे छक्के ।

ओ अगों गी नस्से,

तूं पिछड़ा परतोना एं ।

सुनेआं ब्रह्मानन्दा,

जे इयै रेहा धन्दा ।

तां रोना निं जन्दा,

तूं कैस पर पसोना एं ॥५॥

तेरी सुन्ने दी दाढ़ी,

उयै नई ही म्हाड़ी ।

में आपूँ गै बगाड़ी,

बिच लीखां संजारियां ।

तूं मुलखें दा बाली,

हैसा अम्मी उस्सै चाली ।

पर सकेआ नईं सम्भाली,

चुक्की पापें दियां खारियां ॥

तेरी बद्धी नईं खुलदी,

ते लग्गी नईं भुलदी ।

तां माया नईं डुलदी,
 जिनें तोड़ चाढ़ियां ।
 ब्रह्मानन्दा दिखख,
 ए बड़ी चंगी सिखख ।
 इसी अपने पासै खिच्च,
 हुन नेडै निं बारियां ॥६॥
 तेरा हुकम नेआ चलदा,
 जेड़ा बिन्द निं टलदा ।
 इयां पत्तर निं हलदा;
 ए भला नियम बनाया ई ।
 तूं खुन्दरा च छप्पेआ,
 पर भेत नईं दस्सेआ ।
 शिवें ताण्डब बी नच्चेआ,
 पार नईं पाया ई ॥
 रिखी मुनी रली सारे,
 ओत्री तुप्पी हुट्टी हारे ।

पर अम्मीं उत्थें रौना,
ते उयै ठकाना एं ॥

ब्रह्मानन्दा कन्ने रोआना,
कन्ने आपूँ गै हसाना ।

तूँ कईं बेख बनाना,
मेरा ते बहाना एं ॥२॥

तूँ अरुखीं दा तारा,
सब तेरा पसारा ।

उयै लेखा ई म्हाड़ा,
में जीब खोआया ऐ ।

आपूँ भुगत खोआना,
मिगी जालै च फसाना ।

ए चंगा जराना,
में तेरा के गोआया ऐ ॥

अऊं जुग जुग औना,
ते तुई तुपदा रौना ।

तूँ नजरी निं पौना,
भला जादूँ पाया ऐ ॥

आपूं खुल्ला रेया,

ते मिगी जकड़ी लेआ ।

ए के रफफड़ पेआ,

ब्रह्मानन्दै सुनाया ऐ ॥६॥

तूं सबने थारें,

जंगलें ते पहाड़ें ।

अन्द्रें बी बारें,

पर मेरे शा शेई आ ।

मिगी जद औन्दा फुरना,

अऊं छुपे पैरें दुरना ।

तूं जिद्दी दा नईं मुड़ना,

खुंजा छप्पी वेई आ ॥

तेरी चौनी कूटें दुहाई,

थोड़ी मिम्मी धुम पाई ।

तुद लेखै नईं लाई,

अऊं मता पिच्छें रेई आ ॥

तेरी नोहार मिठ्ठी,

मती बरफू शा चिट्ठी ।

जेल्लै ब्रह्मानन्दै दिक्खी,

तां बाजी लेई आ ॥१०॥

तेरा सबनें च कट्ट,

कन्ने रौना बखो बख ।

तूं मारें मेरी भत्त,

तेरी के बड़ेआई ऐ ।

तूं अन्दरै दा भेती,

जीब जन्तु तेरी खेती ।

भैं भलेयां गल्ल मेची,

जेल्लै सार पाई ऐ ॥

अस दौमैं इक्कै भिक्कै,

भायें अन्नां नईं दिक्खै ।

जे रौमां वी भिक्कै,

मेरी तेरी के लड़ाई ऐ ।

साड़ा चरोकना नाता,

ब्रह्मानन्दै भलेयां भाखा ।

अखखीं दिखखी पछाता,

तां माया घबराई ऐ ॥११॥

तूं अन्तै दा साथी,

भायें पुत्री होन पापी ।

में सच्ची गल्ल भाखी,

भूठ निं गलाना ।

अन्दर वेही सारत मारें,

डोबें भायें तारें ।

इत्थें उत्थें दौने थारें,

सच्ची कलम चलाना ॥

तूं सारें ने चंगा,

भायें गोहाड़ा होयै नंगा ।

जेड़े जानी लैन पंगा,

उनें गी बी खलाना ॥

ए दिखखी ब्रह्मानन्दा,

मिगी लगदा तेरा मन्दा ।

ब्रह्मानन्द के खटेया,

जे अजें बी पापी ऐ ॥१३॥

तूं आपूं अन्तर यामी,

कन्ने माया दा स्वामी ।

मी पाई गलामी,

तुद के कमाई लेआ ।

दिन रात बांगूं तौते,

खाई नीद्रें दे भोके ।

बेई व्याकरण घोटे,

छड़ा सिर खपाई लेआ ॥

अऊं तुप्पी तप्पी रज्जा,

तूं उत्थें बी निं लभा ।

जेल्लै भलेयां रोन लगगा,

गुरें शरनीं पाई लेआ ॥

अन्द्रै दा भाव तोली,

उनें बेद ऋचा बोली ।

ब्रह्मानन्दै अखख खोली,

तू अगों आई गेआ ॥१४॥

तू दानियें दा दानी,

ते मानियें दा मानी ।

पर मिगी इत्थें आनी,

तुद मंगता बनाया ई ।

ए भला कम्म होआ,

अऊं जीन्दा गै मोआ ।

तां मिगी के थोआ,

छड़ा ममता च पाया ई ॥

जोड़ी तेरे ने नाता,

अऊं गेआ घरा घराना ।

उलटा फाई च फासा,

तुद मुंहां नि बलाया ई ॥

ब्रह्मानन्दा अऊं कच्चा,

तू सबने गलें सच्चा ।

जिसी देई सौ धक्का,

तुद अत्थरुयें रोआया ई ॥१५॥

तूं जती सती,

करोड़ें अरबें दा पती ।

अऊं बगारा च फसी,

कौडी कौडी गी तरसां ।

में चवख्खा धिरेया,

ते सबनें शा थिड़ेया ।

कन्ने हत्थ जोड़ी फिरेया,

ते पिरी मिगी दबकां ।

तेरी शनाई चंगी,

मिगी दुगड़े दी बी तंगी ।

ना भिख्ख थोन्दी मंगी,

भी कैस पर हरखां ।

भायें तुगी नईं परवाह,

तूं आपूं शैनशाह ।

ब्रह्मानन्दै गी के लाह,

जिसी छड़ियां बढकां ॥१६॥

तूं आपूं नरा नरोआ,

अऊं रोगें जकड़ोआ ।

कईं बारी जम्मी मोआ,

ए चंगा जराना एं ।

तूं डोहलें पींगें चढ़ना,

अऊं घर घर पानी भरना ।

ए खरी करना,

भी मिगी डराना एं ।

तूं औगनियें गी तारना,

उच्चे संधासन चाढ़ना ।

मी परती परती मारना,

सौती दा ते बहाना एं ।

ब्रह्मानन्दा वाह वाह.

मिगी तेरा के बसाह ।

नईं बी होयै गनाह,

तां बी फटकारना ॥१७॥

तेरी लखखें पर कलम,
मेरा कौडी निं भरम ।

ए कुसी ऐ शर्म,
जेड़ा तरफेयानी एं ।

अऊं ओआसियां मारां,
बेढ़ै कां डोआरां ।

तूं दें फड़कारां,
मेरी ए कदर जानी एं ।

अऊं राहियें गी पुच्छां,
दौड़ी हुट्टियां खुश्चां ।

तूं मरोड़न लगा मुच्छां,
मी बड़ी हरानी एं ।

ब्रह्मानन्दा उठ,
नेह खसमै गी निं पुच्छ ।

अपनी लटी पटी चुक्क,
दौं दिनें दी महमानी एं ॥१६॥

तू लाल्लें दा बी लाल,
ते लाडला गोपाल ।

मी करियै कंगाल,
मेरा कौडी मुल्ल पाया ई ।

आपू संधासनें चढ़ना,
ते सरोबरें तरना ।

में किचरक जरना,
जिसी खड्डुं रुढ़ाया ई ।

अऊं हीखिये पेया,
ते पसोई पसोई गया ।

भी सुक्का गै रेया,
कन्नो साथा खंडाया ई ।

ब्रह्मानन्दा गुलजारां,
ते बसन्त बहारां ।

अऊं कां गै डोआरां,
जिसी रडै रुलकाया ई ॥२०॥

आपूँ मोतिरें दा मोती,
 परम जोतियें दा जोती ।
 मी भूतें च भोकी,
 तूँ खज्जल कराया ई ।
 इत्थें इक निं मान,
 मिगी पंज मसान ।
 लगे रस्सै नचान,
 इनें उम्बलने लाया ई ।
 जूआं ते लीखां,
 मगर लाइयां घसीटां ।
 अऊं रोआं ते चीकां,
 तूँ तमाशा बनाया ई ।
 तेरा होआ हासा,
 ते अऊं बिच फासा ।
 ब्रह्मानन्दै दा नाता,
 भला तोड़ नभाया ई ॥२१॥

तेरै नौकरें पर नौकर,

अऊं बिना चुम्बा चौखर ।

जियां औत्रें दा औत्तर,

ए चंगा राह ऐ ।

अऊं शमें मरदा रौन्ना,

जाई परती परती औन्ना ।

तू खिजी खिजी पौन्ना,

मिगी तेरा के लाह ऐ ।

आपू कड़ाह ते सुच्चियां,

मी मिसियां सुक्कियां ।

ओबी बचियां खुचियां,

भला तेरे ने बाह ऐ ।

निज्ज तुद खसमै नेह,

तेरै आई लेया एह ।

ब्रह्मानन्दै सिर खेह,

तुगी वाह वाह ऐ ॥२२॥

तुई मखखन डबल रुट्टियां,
मी छड़ियां लत्ता-मुकियां ।

अऊं रोई रोई हुट्टियां,
खैहड़ा बी निं छोड़दा ।

ए तेरियां परवाइयां,
नित रौजै दियां लड़ाइयां ।

में भुल्ली अखखीं लाइयां,
प्योकै बी निं टोरदा ।

मुंह खटी खटी बौन्दा,
ते रुस्सेया गै रौन्दा ।

नक्क बी निं नौन्दा,
नां मूंहां बोलदा ।

ब्रह्मानन्दा हुन दस,
नेह खसमै होई बस ।

जेड़ा नईं बौन्दा कच्छ,
नां झुण्ड खोलदा ॥२३॥

तेरै हाथी पलदे,

सिगी घरै दे निं भलदे ।

ਸਾਰੇ ਉਠੀ ਉਠੀ ਲੜਕੇ,

तू सत्थे टक्काना एं ।

अङ्ग जित पासै जां,

ਸੀ ਬੈਨੇ ਗੀ ਨਿੰ ਥਾਂ ।

तुई हथें छां,

भी नक्क चढ़ाना एं ।

तूँ शाहें दा बी शाह,

मेरा कौडी निं वसाह ।

ए चंगा राह,

लोक आखदे जराना एं ।

तू सबकालें चलना,

में धारां छड़ना ।

ब्रह्मानन्दै गै जरना,

जियां अखचै बगाना एं ॥२४॥

आपूँ अमरतै च बड़ेया,
मिगी कच्चा चम्म मढ़ेया ।

ओबी गन्दगी दा भरेया,
ए लाज कुसी ऐ ।

तुई मलाइयां ते खीरां,
मी भुख्खा दियां पीड़ां ।

पैसे पैसे दियां भपीड़ां,
कदें बात बी पुछी ऐ ।

आपूँ फुल्लें च समाना,
मिगी दित्ता पागलखाना ।

रोई तुई सुनाना,
जेड़ा नसना रुसी रुसी ऐ ।

तुई सारै वाह वाह,
अऊं लक्का लग्गा फाह ।

कदुं होआ नरवाह,
जे ब्रह्मानन्द दुखी ऐ ॥२५॥

तेरा रुख ते दुपासा,

अऊं खिण्डेआ नईं साथा ।

मिगी आई गेआ हासा,

वाकी होर हारे नी ।

तुद लाई लम्मे लारे,

कईं बसदे घर जोआड़े ।

नेई जंगलें पटकारे,

ते बिरले कोई तारे नी ।

अऊं दिखखी भला बचेया,

तौला उठी घरा नस्सेया ।

तेरे पैरें सिर रखेया,

ते चारै लड़ भाड़े नी ।

ब्रह्मानन्दा हरे हरे,

तेरे कोला डरे डरे ।

तान्ने मारी खरे खरे,

सारे तोड़ चाढ़े नी ॥२६॥

अऊं ब्रह्मानन्द तीर्थ अखनूरी,
 मिगी तेरे पर श्रद्धा बी पूरी ।
 रेइयै में तेरी हजूरी,
 भलेयां सार पाई ऐ ।
 जाईं गुरगी दी ढक्की,
 में आपूँ इट्ट रक्खी ।
 ते पत्थरें दी पक्की,
 समाधि बी बनाई ऐ ।
 उत्थें शिवजी पधराये,
 ते पदासे बी बंडाये ।
 कन्ने बाजे बी बजाये,
 रुद्री हवन पाठ कराई ऐ ।
 तेरे चरनैं चित्त लाया,
 भुल्ला दा बखशाया ।
 तुगी जोड़ी हत्थ सुनाया,
 भजन मालां मुकाई ऐ ॥२७॥

